



## गांधीजीकी कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

अहिंसक समाजवादकी ओर	१००
आरोग्यकी बुजी	०४४
आपिन और औद्योगिक जावन — भाग १	४००
सानी क्या और कैसे ?	२००
गांधीकी मन्त्रमें	०४०
गोकुल	१५०
बापूकी कर्ममग	२५०
बापूक पत्र कु० प्रेमावहन कटकर नाम	४००
मरा धम	२००
मरे सपनावा भारत	२५०
मोहन माग	१२५
समनाम	०५०
विद्याधिपति	२००
विद्यार्थिका अहिंसक माग	०४०
गिशाकी समस्या	२५०
सर्वी गिशा	२००
सत्य ही ईश्वर है	०८०
सर्वोत्प	२००
स्त्रियां और उनको समस्या	१००
हमारे गांधी पुनर्निर्माण	११०

डाक्टरके अलग

सत्यजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४

## अथ विचार-प्रेरक पुस्तकें

आत्म रचना अथवा आश्रमी शिक्षा — १	१५०
आत्म रचना अथवा आश्रमी शिक्षा — २	१५०
आत्म रचना अथवा आश्रमी शिक्षा — ३	१५०
आधुनिक जगतमें गांधीजीकी काय-पद्धतिया	१००
आपाका एकमात्र माग	२००
गांधीजी और गुरुदेव	०८०
गांधीजीकी साधना	३००
गीता मयन	३००
गीता रत्न प्रभा	३०
ग्रामसेवाके दस कायक्रम	१२५
जडमूलसं क्रांति	१५०
जीवन गाधन	३०
तालीमकी बनियादें	२०
बापूकी छायामें	४००
बिहारकी कौमी आगमें	३००
विचार-ज्ञान १	१५०
विचार-ज्ञान २	१५०
विवेक और साधना	४०
गराबबन्दी क्या ?	१००
संसार और धर्म	२५०
सरकारकी अनुभव-वाणी	१००
हमारी बा	२००

डाक्टर अलग

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४

# आश्रम-जीवन

[ यरवण मन्त्रिरस भेत्त हूए पत्र प्रवचन ]

गाधीजी  
अनुवादक  
सोमेवर पुरोहित



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर  
अहमदाबाद-१४

जीवन-पद्धति करते थे। उन्होंने सत्याग्रह आश्रमका इतिहास नामक पुस्तकके आरम्भमें ही लिखा है

आश्रमका अर्थ यहाँ सामूहिक धार्मिक जीवन है। वतमानकी दृष्टिसे भूतकात्को देखने पर मुझे लगता है कि ऐसा आश्रम मेरे स्वभावमें ही था।

दक्षिण अफ्रीकासे आरम्भ करके जीवनका अंतिम दिन तक गांधीजीन इसी पद्धतिका पालन किया और धर्म-परायण सामूहिक जीवन बसा हाता है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे सामने रखा।

इस प्रकार आश्रम-जीवन का भावायु धार्मिक या धर्म-परायण जावन होता है। गांधीजीन हिन्दू धर्मके अनक महान सिद्धान्ता और महान वनाका सामूहिक या ध्यापक रूप देकर उनका अवलोकन किया उन पर विचार किया उन्हें व्यवहारमें उतारा और योगको समझाया। उन्होंने प्राचान [आश्रम धर्मके सिद्धान्ताका हिंद स्वराय अथवा रामरायकी दृष्टिसे सामूहिक अर्थ किया और आश्रमके द्वारा एसी जावन-पद्धतिका विकास करनेके लिए जीवन भर अथक प्रयत्न किया।

एसी जीवन-पद्धतिके कुछ सिद्धान्त इन पुस्तिकामें अलग अलग प्रवचनाने रूपमें मिलेंगे। जा योग इस विषयमें व्यवस्थित अध्ययन करना चाहते हैं उन्हें इस पुस्तिकाके साथ सत्याग्रह आश्रमका इतिहास खान तौर पर पढ़ना चाहिये। मगर प्रभात के प्रवचन भी इन सत्रमें पढ़न जैसे मान जायग।

य पत्र प्रवचन विषय रूपसे आश्रमवासियोंका ही ध्यानमें रखकर लिख गय ह। लेकिन जा लाग किनी आश्रममें न रहते हुए भी अपनेको आश्रमवासा मानते हैं या आश्रम-जावनका गम भावनासे अध्ययन करते ह उनके लिए भा यह पुस्तिका बाधक सिद्ध होगा। दूसरे इसकी गली इतनी सरल है और इसमें इतन अलग अलग विषयोंकी चर्चा की गई है कि छात्र बालक भी इसे समझे साथ पढ़ सकेंगे। यह इस पुस्तिकाका एक विषय गुण है। इस तरह हम आगा करते ह कि यह पुस्तिका सभी योगके लिए लाभकारी सिद्ध होगी।

## पाठकोंसे

मेरे लक्ष्यात्त मेहनतसे अध्ययन करनेवाला और उनमें निश्चिन्ता से लेनवाला मैं यह कहना चाहता हूँ कि मुझे हमारा एक ही रूपमें लिखाई देनेकी कोई परवाह नहीं है। सत्यकी अपनी गोजमें मैं बहुतसे विचाराको छोड़ा है और अनेक नई बातें मैं सीखा भी हूँ। उमरमें मैंने थोड़ा बढ़ा हो गया हूँ लेकिन मुझ ऐसा नहीं लगता कि मेरा आन्तरिक विकास होना बन्द हो गया है या देह छूटनेका काम मेरा विकास बन्द हो जायगा। मुझ एक ही बातकी चिन्ता है, और वह है प्रतिक्षण सत्यनागायणकी वाणीका अनुसरण करनेकी मेरी तत्परता। इसलिए जब किसी पाठकोंको मेरे दो लेखोंमें विरोध जमा लग तब अगर उसे मेरी समझावरीमें विचारना हो, तो वह एक ही विषय पर अपने दो लेखोंमें से मेरे वाक्यों का प्रमाणभूत मान।

हरिजनवापु ३०-४-३३

— गांधीजी

## अनुक्रमणिका

प्रकाशकका निवेदन

१ मृत्युरूपी मित्र	३
२ इमाम साहब	३
३ शिक्षाके विषयमें दो गद	५
४ हमकी एक धम-परायण महिला	१२
५ आनाग-दगान	१४
६ लेखा-जोखा निकालनकी जरूरत	२३
७ राष्ट्रीय सप्ताहका सार	३३
८ सफार्द सचाई पवित्रता और सुघण्टा	३६
९ अनायास त्याग	८
१ बिल्गी शिक्षिका	४१
११ मत्स्यम मिलनवाला सबक	४३
१२ तितिक्षा और यज्ञ	४५
१ प्रायना	४८
१४ अट्टिमाका पालन कसे हो ?	५१
१५ सत्यका पालन कसे हा ?	५२
१६ विशाम्यास	५४
१७ व्यक्तिगत प्रायना	५५
१८ देगरतका जरूरत नहा	५७
१९ गाताको कटस्य करो	५९
२० डॉ प्राणजीवनगस मेहता	६१
२१ वाचन और विचार	६
२२ विचारपूण काय और विचारहीन काय	६५

आश्रम-जीवन





## मृत्युदूषी मित्र

गॉत्रगम एयसका मयाना और चतुर पुत्र्य हा गया है। उसवे नय परन्तु सग्यारका बकानवाल विचार बहाक गामवोंरा पन्त नही आय इगर्णिए उम मौनवी गजा मिला। उस जमानमे बहा जहर सावर मर जानगी सजा भा दी जाती थी। गॉत्रेगीमका मारवाईकी तरह जहंगा प्याला पीना पना था। उस पर अन्तमें मुबदमा चला उम समय गॉत्रेगीमन अपने भाषणमें जा अतिम बल बह थ उनवे सार पर यटा हमें विचार करना है। उसवे हम मरका नमीहत लनी चाहिये। गॉत्रेगीसका हम मुक्त बहेंगे। अरबस्तानवे लाग उस साभ्रातवे नामग जानत थ।

मुकृतने कहा था मरा यह पत्रा विस्वाम है वि भल आत्माका दग रोचने या परलारमें कभी बुरा होता ही नहीं। मर आत्मियाना और उनवे मायियाका भगवान कभा लाडला नही। इमक मिस न ना यह भी मानता हू वि मरा क्या और दूमराकी क्या —मौन एकाएक नहीं हानी। मौनकी गजा मुग दी गई गजा नहा है। मरा मौनता और जावनका शमन जावनक दुगर्णोंउ एनका समय अब आ गया है। इसालिए आपन मुम जहला प्याला पानका शिया है। इगामे मरा कयाप मरा भग्य रहा हागा। और इस कारणम मरा फरिया करनवाग पर या मुम गजा दनवाग पर मर मनमें जरा भी श्रम नही है। मर ही उहाने मरा भग्य न पाहा हा एरिन व लाग मरा बुरा भी नही कर मरा।

पचारी इग मनाग मरी एर विनती है मर एर अग नगर्णका गम्ना छाडकर बगर्दवे गम्न जाय और पगता लाभ कर ता जम आप लोग मग गजा दन हू वम ही मर जहलाका भा शत्रिय। थ ठोंग बने और जम थ गना हू वम दिगोका प्रपलन

करें तो भी आप उनका सजा गजिय । अगर आप ऐसा करग तो म और मरे ँडक यह मानग कि आपन सब झठकी अट्टी तरह जाच करके हमारे साथ सचा याय विया है ।

अपनी सतानके बारेमें सुकृतकी यह भाग अनोखी कही जायगा । जो पच-मभा सुकृतना याय करनके लिए बठी थी वह अहिमाक धमका नहीं जानती थी । इसीलिए सुकृतन अपन ँडकाके लिए ऊपरकी भाग करके उन्हें सावधान कर दिया और यह बता िया कि उनमे वह कमे यबहारका आशा रखता है । याय करनवाल पचाकी सुकृतन भीठा उलाहना िया क्योंकि उन्हान सुकृतको उसकी भलमनमाहतक लिए सजा दी थी । उसन अपन ँडकाको अपना राभ्ता लनका बान मुजाकर यह बनाया कि जा रास्ता उमने एयसके नागरिकाको दिखाया है वही उसके अपन ँडकोके लिए भी है इतना ही नहीं सुकृतन यहा तक कह िया कि अगर उसके लक उस रास्ते पर न चले तो वे सजाक लायक मान जाय ।

इस हफते कुछ न लिखनका मन पहरेसे ही विचार कर िया था । लेकिन ऐसा करना मुझ खटका । इसलिए जब मन यहा अपन पामकी पुस्तका पर नजर डाली ता मुझ सुकृतका भाषण दिख्वाई पडा । उसमें स कुछ लिखकर भजू एसा साचकर ज्या ही मन पुस्तक सोगी त्या ही भरी नजर उसके जग प्रसिद्ध भाषण पर गई और उममें स मन ऊपरका मार ियि डाला ।

धरवण मरि

२९-२-३२

## इमाम साहब

१

बापगाता<sup>१</sup> के प्रकरण भजनवे लिए अमा म तयार नहा हुआ है। इस बार क्या भजू यह माचने पर मुय ग्या कि इमाम साहबके सम्मन्त्र आश्रमामियति लिए मुस लिंगन चाहिय और इस पवित्र बायम डिगर्द नहा बरती चाहिय। इसलिये तिनन भा भजने जमे सम्मरण मरी बन्म पर चढेग उनन म यग लिख डालूगा।

म जिम साल (मन् १८०३) दणि अफाता गया था गगमग उमी गा इमाम साहब भी बग गय थ। उनका पूरा नाम ता अडु<sup>२</sup> बान् बाबाजीर था। लेकिन दणि अशीबामे उहाने इमामत<sup>३</sup> की था इसलिए बहुतम लाग उ हें इमाम साहबके नामउ ही जानने थे। मन ता उह दूगरे नामत बभी पुकारा हा नहा।

इमाम साहबका पिता बर्दकी मगहूर जुम्मा मगजिब मुअ्रिजन<sup>४</sup> थे और अत समय तर उमी प<sup>५</sup> पर रहे थ। इमाम साहब हिउम्तान आय उगर या ही उनक पिताजाकी मृत्यु हुई। अत्रानर जि म<sup>६</sup> हाप धारक राक हा रहे थ इतनेमे ही उनकी नाम उड गई। एमा मृत्यु बहुत गम और पवित्र मानी जानी है। इमाम साहबका बापगाता अत्र ने। बन् गा प<sup>७</sup> व बाबगमे आतर बम गये थे इसलिए इमाम साहब बाबनी भाषा भी जानत थ। उनकी मानुभाषा ता गुजराना हा थी लेकिन मृत्युका पड़ा उनकी बन् कम हुई था। कुरान गराफा

१ बापगाता गानारी उम पुम्नबता गाबा हुआ नाम है ज बापगाते नामका इलिम गापात्राने जमे लिए भजनेका विचार रिया था।

२ मुगमानति पमगुफा नाम।

३ मगजिमे अत्रान पुकारनवाः।

उच्चारण सुंदर ढंगसे कर सकें इतनी अरबी वे जानते थे। लेकिन कुरान गरीफके सारे जय कर सकें इतना अरबीका पान उन्हें था ऐसा नहीं कहा जा सकता। अनभवसे उन्होंने अग्रजी डब और क्रिआल फ्रेंच जान ली थी। उदू तो वे जानते ही थे। अपना काम चंगन लायक जूलू भापा भी वे जानते थे। उनकी बद्धि इतनी तेज थी कि अगर उन्हें नियमसे किसी स्कूलमें शिक्षा पाई होती तो वे वक्तवितान बनत और मान जाते। वे वकील नहीं थे फिर भी जनभवसे वे कानूनकी पकडसे वचनके रास्ते जान गये थे।

इमाम साहब यापारके लिए दक्षिण अफ्रीका गये थे। काफी पसा भी उन्होंने कमाया था। जब यापार करना उन्होंने छोड़ लिया तब वे किरायसे दी जानवागी घाणगाडिया रखते थे और उससे भी अच्छी कमाई करते थे। वे आजाद स्वभावके थे इसलिए बड़ यापारमें ता कभी पड़ ही नहीं। उनकी आवाज मीठी थी। उनके पिता मजिजिन थे इसलिए जोहानिसवगकी मजिजिनमें समय समय पर वे इमामत करते थे। लेकिन इस कामके लिए उन्होंने कभी कार्र पसा नहीं किया।

इमाम साहबन दो विवाह किये थे। दोनों पत्निया मलायायी थीं। पहली पत्नीके साथ उनकी बहुत बनी नहीं इसलिए उन्होंने दूसरी स्त्रीसे विवाह किया — जिसे हम जानत थे। दूसरे विवाहमें इमाम साहबका बहुत सुख मिला। राजी साहबान इमाम साहबकी और इमाम साहबन हाजी साहबाकी मुत्तर सेवा की थी। दोनों एक-दूसरेके सच मित्र थे। जहां तक मन इमाम साहबका समझा है उनके आधार पर यह कह सकता हूँ कि विवाहके बारेमें उनके विचार बहुत बल गये थे और वे एक पत्नीके ही हिमायती हो गये थे।

यखंडा मन्दि

७-३-३२

जमा कि हम जानत ह इमाम साहबन अपनी दाना उडकियाका विवाह करनमें देगा बहुत खयाल रखा था। उनका प्रयत्न एसे

जमाई साजनेवा था जा हिन्दुस्तानकी सेवा कर हिन्दू-मुसलमानाकी एकरता समर्थ और आधमके जीवनकी गाम्भा बनाये। इसलिए उहाँने मुजगलके गरीब मुसलमानाका ही जमाईके रूपमें यात्रा।

ऐसा कहा जा सकता है कि इमाम साहबने मरी पहली मुात्रात १९०२ में हुई जब मैं फिरसे दक्षिण अफ्रीका गया था। इमाम साहबन मुझसे कहा था कि उममें पहले भी हम दोनों मिले थे पर मुझ उमरा बाद स्मरण नहीं है। जब मैंने जाहानिमवगमें बरगान धरु की तरफे मुषविरागके साथ मेरे पास आया करते थे। उस समय उनका गान कुछ और ही थी। पोगान व अफ्रीकी कगकी पहनने व फिर पर मुर्फी टोपी रगत थे। इमाम साहबकी चनुराईका तो मैं तुरत जान गया था। लेकिन और बातोंमें मुष पर उनकी छाप तुरत आती नहीं पडी। मुझे ये बडे हठीके मामूम हुए। लेकिन जस जस मैं उह ज्यादा पहचानना गया वसे वस वे मेरे अधिक प्रिय बनत गए।

ज्या ज्या उनके बारेमें मरा अनुभव बढ़ता गया मैं यह समझता गया कि त्रिग म उनका हठ मानना हू वह अमाममें उनका हठ नहीं है बकि हर बातकी पूरी तरह समझनेका उनका आग्रह है। किसी बातके बारेमें उन्होंने जा राय बनाई हा जमे व तत्र तत्र नहीं छाड़ने थे जब तत्र उनकी बुद्धि स्वाकार न कर लती था। मुष यकीन नहीं ह इसलिए बरागमें सम्बध रगनेवागे बातोंमें बराग जा कुछ बह वहां देववाक्य — नरामा करन गायक बात — है एगा व कभी मानकर पत्र ही नहीं थे। बरागनम सम्बध रगनेवाल मामगमें भी वे वकीला के साथ बहग परत रगत थे। इमाम साहबन मूनी गिला नहीं पार थी फिर भी अपनी बुद्धि पर उनका पूरा विश्वास था। इमक गिला स्वाभिमानक गवाग पर वे कभी नहीं सजने थे। इसलिए जिनाक धगरमें १ आकर अपनी शानका मजबूतीमें पबट रहनेकी इमाम साहबमें जो चारी लकि थी उग मैंने बहुत जल्दी पहचान लिया था।

पहल तो इमाम साहब मुषविरागकी बारेमें उनका मामग समझाकर लिए मेरे पास आत थे। लेकिन दुनियामें चलनवासी बातोंमें वे निष्पत्ती लेत थे और मुझे भी उनकी बचामें उतारले थे। निग

## आध्रम-जीवन

अमीकामें हमारे हिन्दुस्तानी लोगोंको जा दुख भोगन पडते थ उनके बारेमें होनवाली सभाआ आदालना वगरामें वे भाग लेते थ। बहुतसी बातोंमें वे मरा साथ देत थ लेकिन जब मेरी कोई बात उह पसंद नहीं आती था तब खुल आम भी मेरा विरोध करनमें उहे कोई हिचकिचाहट नहीं हाती थी। परंतु इस तरह धीरे धीरे इमाम साहब मेरी आर खिचत गय और जब सत्याग्रहकी लडाई दक्षिण अमीकामें गरू हुई तब गार्डम व पहाडकी तरह अडिग सावित हुए। कुछ लोग नाचे गिरे बन्तरे कमजोर पड गय कुठन क्क विरोध किया लेकिन इमाम साहब कभी अपनी प्रतिपास न्गि हा एसा मुझ याद ही नहा जाता। जब पहली बार उह ज्की सजा मित्री तब किसीको एसी आगा नहा थी कि व जल्के भारी दुख झल सकेंग। पहली जल ता कुछ ही दिनकी था। लेकिन कई लागान उनक लिए मनमें आदर राखनवाला न भा मयस कहा था इमाम साहब फिरसे जल नहीं जा सकेंग। वे बहुत नाजक ह गौकीन आदमी ह उनकी जरत ज्यादा ह। यह बात बहुत ह तब सच भी थी। लेकिन इन सबके बावजूद इमाम साहब कभा कमजोर नहीं पड। और जो लाग सादगा पसन्द मान जात थ उह मन नीच गिरते देवा था। इमाम साहबमें त्याग करनकी कुरबाना दनकी बहुत बडी गक्ति थी। किसी बातका निश्चय करनस पहल व सुब साचन थ लेकिन एक बार निश्चय कर लनके बाद उस पर न्क रनकी उनमें अनाली गक्ति थी। जब इमाम साहब सत्याग्रहमें क्क थ तब उहान सपनमें भी कभी इमारा सत्याग्र नहा किया था कि उह अपना घरवार ताडना पडगा और फकीरा लनी पन्गा। परन्तु जब उहान दखा कि सत्याग्रहमें दुड और मजबूत रहना हा ता घरवारका माह छोडना ही पडगा तब उहान एक पलमें यह माह छाड न्गिया एसा कहा जा सकता है। इमाम साहबके लिए यह कोई मामूली बान नहीं था।

सरवण मन्दि

१४-३-०

हमें यह याद रखना चाहिये कि इमाम साहबने अश्रेयशुद्धि के अन्त पर क्या कहा था। हाजी साहबका यह मत ही अश्रेयशुद्धि का था। फातिमा और अमोना का भी अश्रेयशुद्धि का तब पालन-योग कर बना किया गया था। एम आत्मिक विधि अन्त भाग कर कर कर एक-एक माला जाकर अन्तर्गत बना करिन काम था। एमिन् इमाम साहब जब बाद बात करनेका निश्चय कर ली थी तब कठिन काम भी उनसे विधि आसान बन जाता था। यही कारण है कि जब मने जाहानियोग छात्रों के फिन्किगमें जा बनना निश्चय किया तब इमाम साहबने खुद फिन्किगमें बगनकी जपना इच्छा बनाई। उनसे निश्चय और दुइनाका भी जानना था फिर भी यह बात मुनकर म दग रह गया था। फिन्किगमें बगनग उठ कया कया कठिनाया उगानी पड़ना इमाम साहब मन उनसे मामन रगा। जिन्हान कभा हाथ-पाव नहीं हिलाय और एक तरहका साहब ही भागा है व एसाणक महनन-भाकाय करनवाल मजदूर कम बन मक्के? इमाम साहब का साहब फिन्किगका कही महननका जीवन मन्न कर लें एमिन् उनका पना हाजी साहबका क्या हागा? फातिमा और अमोनाका क्या हागा? इन मवालि विधि इमाम साहबका साहब और स्पष्ट जवाब यह था मन ना गुना पर मरगा रगा है। हाजी साहबका आदर ही पहचानत। एमिन् व ता जहा म रहुगा वहा रहनका समार ही हा जायगा। और जिन्ह तह में रहुगा उगा तरह व भा रहेंगा। इमालिण आपकी दूमरा कोई कठिनाई न हा ता मरा फिन्किग आनका पना निश्चय है। हमारा जवाब कब पूरा हागी यह बात नहीं जानता। मस नहीं लगता कि अब मैं घाणगाहाका या दूमरा कोई घाण पर मरूगा। और आपका तरह मन भी यह मानम किया है कि मयापहाका घन-मोम परदार बगराका साहब छात्र दना चाहिये। मुझ ता इमाम साहबका प्रत्याय अन्त लगत। मन



फिनिक्सके साथियाको यह बात खिन्वी। उन्होंने भी इस प्रस्तावका स्वागत किया। जीर इमाम साहब अपन परिवारके साथ फिनिक्स आश्रममें जा गये।

आश्रमके बहुत लोगको गायद इस बातका पता नहीं होगा कि इमाम साहब फिनिक्सके सारे कामोम भाग लेन लग गये थे। सबका अपना अपना पानी नीचे बहनेवाले झरनेसे भर कर लाना होता था। यह झरना निचार्डमें था। जीर लगभग पचास फुट ऊंची एक टकरी पर फिनिक्स आश्रमके मकान बाध गये थे। इमाम साहब उस समय भी नाजक ही थे लेकिन मदेरेके समय वे बिलानागा अपनी नावर लेकर नीचे उतर जाते और धीरे धीरे पानी भर कर ऊपर ले आते थे। आश्रममें आज जो स्थान चरखका है वही स्थान फिनिक्समें छापाखानका था। छापाखानके किसी न किसी विभागमें लडके-लडकियोंको बूढ़ बूढ़ियोंको पत्र लिखों और अनपत्नोको — सभी लोगको काम करना हाता था। टाइप जमाना (कपीज करना) अखबारकी तह करना रख तयार करना टिकट विपकाना मशीन बन्द हो जाय तब चक्र घमाना — जैसे अनक छोट-बूट काम बहाके लोगको करन पडते थे। इन कामों अपना घाडा समय सभीको देना हाता था सास करके अखबार निवानके लिन। इस काममें इमाम साहब हाजी माहवा फातिमा और अमाना चारा ही हिस्सा लेते थे। इमाम साहबन टाइप जमाना सीख लिया था। यह उनकी उमरमें और उनक जस आत्मीके लिए अचरजकी बात थी। इस प्रकार इमाम साहब फिनिक्सके जावनमें पूरी तरह घुल मिल गये थे। इमाम साहब तथा उनके परिवारक लोग मान खानक आदी थे। लेकिन फिनिक्समें इमाम साहबन कभी मास पकाया हा ऐसा मझ बिलकुल यात्र नहीं आता।

लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि इमाम साहब किसी भी तरह करने या गपरवाह ममत्मान थे। नमाज राज बगरामें इमाम साहब या उनका परिवार कभी भी नागा नहीं करते थे। लेकिन

१ गाधीजी दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्स आश्रमसे इन्धियन आपीनियन नामका अखबार निखालन थे।

फिनिक्मवामियावे माय एकरूप होकर इमाम साहब इस्लामवा मन्वता और मस्जिदका मुन्तर दाग कराने थे।

एक दिन इमाम साहबकी त्याग्यवितकी इससे भी बड़ा बमौला हानी अभी बाकी था। बम ता वे बह बार उठ गये थे और जलम आदवा बनीका जीवन बिताने थे। एकिन १९१४ में जब फिनिक्ममें कुछ गमाका रगकर बाका एवके हिन्दुस्तान जानेका निश्चय हुआ तब इमाम साहबकी बडा बमौलीता समय आया। दक्षिण अफ्रीका इमाम साहबके लिए घर जमा हुआ गया था। हाजा साहबका फातिमा और अमीना हिन्दुस्तानका बिल्कुल नहीं जानती थीं। हिन्दुस्तानका भाषा भी वे नहीं जानती थी। चाही अफ्रीका या डच ही उनका भाषा थी। एकिन इमाम साहबने अपना फर्गन करनेमें जरा भी दर नहा था। जहा म वहा इमाम साहब और उनका परिवार यह इमाम साहबका निश्चय था। यह थी मन्वाब्रह्मके लिए इमाम साहबकी बुरवानी और यह था हिन्दू-मस्जिद एकताका बढानेमें उनका महयाग।

हिन्दुस्तान पहुचनेके बाद इमाम साहबने नया जीवन बिताना उम ता गमी आश्रमवामी जाना है। मरी यह पत्रकी गप है कि इमाम साहब तिनान्ति अधिक ऊबे उठने जाते थे उनकी वृत्तिया गूढ हाता जानी थीं उनकी ईश्वर भक्ति बढना जानी थी और आश्रमके नियमावे चारेमें भी उनकी थडा बढना जाना थी। एकिन इमाम साहब हिन्दुस्तान आये उगवे बालक उनके जीवनके सम्मरण लिग्नेका मरा दुराग नहा है। मरा जो जो गग उनके गहरे परिवर्षमें आय हु य अपन अपन अनभव लिगे और मर इन सम्मरणके माय उनका मरग हा इम में एक उपयागा काम सम्पना है।

परपडा मन्दि

२१-३-३२

## शिक्षाके विषयमें दो शब्द

जान रस्किन उत्तम कलाके लेखन अध्यापक और घमज्ञ पुरुष  
 थ। उनकी मृत्यु १८८० के आसपास हुई। उनकी एक पुस्तक<sup>१</sup> का मञ्ज  
 पर बन्त ही गहरा असर हुआ और उनके बताया हुए रास्ते पर चलनका  
 निश्चय करके मन क्षणभरमें अपन जीवनम बन् महत्त्वके फरबदल  
 कर डाले थ। ज्यादातर आश्रमवासी ता यह बात जानते ही होग।  
 रस्किनन १८७१ में मिफ मजदूर-वगैरों सघानमें रखकर एक मासिक  
 पत्र लिखना गरू किया था। इन पत्राकी तारीफ मन टालस्टायक किसी  
 लखमें पढी थी। लेकिन आज तक म उन पत्राका प्राप्त नहीं कर पाया  
 था। रस्किनके कायों तथा उनकी रचनात्मन प्रवृत्तिसे सम्बन्ध रखन  
 वाणी एक पुस्तक मेरे साथ यहा जन्में आई थी। वह पुस्तक मन यहा  
 पनी। उसमें भी रस्किनके मासिक पत्रोंकी बात लिखी है। उसने आधार  
 पर मन विलायतमें रस्किनकी एक गिण्याका पत्र लिखा। वही इस  
 पुस्तिकाकी श्रेणिका थी। वह बचारी गरीब थी पुस्तकके रूपमें छपे हुए  
 रस्किनके पत्र भला वह मुझ कस भजती ? मूवतासे या शूठ गिण्याकारके  
 कारण मन उसे यह नहा लिखा कि वह आश्रमसे पुस्तकके दाम मगवा  
 ल। उस भन्ना घटनन अपनस अधिक अच्छी स्थितिवाए एक मित्रको  
 भरा पत्र भन लिया। व स्पेक्टर नामन पत्रके सचालक थ। उनसे  
 म विलायतमें मित्र भी चुना था। उन्हान रस्किनके मासिक पत्राको  
 पुस्तकके रूपमें चार भागामें छपवाया था। य चार भाग उन्हान भरे  
 पाम भज न्य। उनमें स पहला भाग आजकल म पन् रहा हू। पत्रामें  
 जो विचार रस्किनन बताया ह वे उत्तम ह। और हमारे अनक

१ इस अग्रणी पुस्तकका नाम है अन्ड न्ति गाल् । इसका  
 गुजराता रूपानर सर्वोन्म नामसे प्रसिद्ध हुआ। गुजराता और हिन्दी  
 संस्करण सर्वोन्म नामसे नवजीवन ट्रस्टन प्रसिद्ध किय ह।

विचारमें व मिलाव ह—इस ह नव मिलन ह वि का अनजान आभी ता यहा मान ले कि मन जो कुछ गिया है व और आधममें हम जा कुछ वगत ह वह सब रस्किनके इन लयामें म ही हमन घुराया है। घुराया गल्का अय ता सब लग समय ही गये हाग। जा विचार वा आचार जिन व्यक्ति लिया गया हा उसवा नाम छिपाकर उय हम अपना विचार वा आचार वह ता यहा जायगा कि हमन उसे घुराया है।

रस्किनन बहुत लिखा है। परन्तु उसमें म इस बार ता म कुछ ही विचार यहा देना चाहता ह। रस्किन कहत ह विलकु अन्तर गान (गिना) न होनेके बजाय याहा भी अगर हो तो वह ज्यादा अच्छा है एसा जा माना जाता है उसमें गहरी भूत है। रस्किनका यह स्पष्ट मत है कि जा गिना गन्वी है जा आत्माकी पहचान करानेवाणी है वही वास्तवमें गिना है और वही हमें प्राप्त करना चाहिये। इसके बाद व कहते ह कि इन दुनियामें हर मनुष्यका तीन चाजाकी और तीन गुणाकी जखल रहती है। जो मनुष्य इहें प्राप्त करके इनका विभाग नहीं कर सकता वह जीवनका मत्र जीवनका मची कुजी ही नहीं जानता। इसलिए ये तीन चीजें और तीन गुण गिनाके आधार हान चाहिये। हरणक मनुष्यका—फिर वह बाप्य हा या बालिका—बचपनग यह जानना ही चाहिये कि साफ हवा साफ पानी और साफ मिट्टी किम कहा जाय उह किम तरह साफ रखा जाय और उना क्या पापना होना है। रस्किनके बताये हुए तीन गुण ह गुणाना—गुणाकी पहचानना—आगा और प्रेम। जिन मनुष्यामें मय वगराने लिए आग महा है जा निती अच्छी वस्तुका पहचान नहीं करने ये आग पमडके गिहार ह और आमानतका—आत्माकी पहचान लेन पर मिन्नवाले आनतका—उपभोग नहीं कर गान। इमा तरह जिन लामामें आगावा नहीं है माती जा ईपरर चापके बारेमें मका रगत हो उनका हूय कभी प्रगन्न रह ही नहीं सकता। और जिनमें प्रेम नहीं है माती पहिमा नहीं है जा गारे जीवारा अपन कुन्वी नहीं मा गरी ये जीवनका मत्र कभी साय ही नहीं करने।

## शिक्षाके विषयमें दो शब्द

जान रस्किन उत्तम कर्नावे लैलक अध्यापक और धर्मन पुरुष थ। उनकी मृत्यु १८८० ई. आसपास हुई। उनकी एक पुस्तक का मसूदा पर बहुत ही गहरा असर हुआ और उसने बनाम हुए शस्त्रों पर चलनका निश्चय करने में ध्यानभरम अपना जीवनभर बड़े महत्त्वके फरकाल कर डाले थ। ज्यादातर आश्रमवासी तो यह बात जानत ही होग। रस्किनन १८७१ में सिफ मजदूर-श्रमिकों लिये एक रस्किन एजेंसी पत्र लिखा गइल गिया था। इन पत्राकी तारीफ में टास्टायके विभा लेखमें मने थी। लेकिन आज तक मैं उन पत्राको प्राप्त नहीं कर पाया था। रस्किनके कार्यों तथा उनकी रचनात्मक प्रवृत्तिसे सम्बन्ध रखन वाली एक पुस्तक में साथ यह जल्में आई थी। वह पुस्तक में यह पनी। उसमें भी रस्किनके सामान्य पत्राकी बात लिखी है। उसके आधार पर मैंने विनियतमें रस्किनका एक निष्ठाकी पत्र लिखा। वहां इस पुस्तिकाकी तैयारी थी। वह बचारा गरीब थी। पुस्तकके रूपमें छप हुए रस्किनके पत्र भंगे वह मध कस भजता ? मूलतः या झूठ निष्ठाका कारण में उसे यह नहीं लिखा कि वह आधमस पुस्तकके धाम मगवा ल। उस भंगे बन्तन अपनसे अरिक् अच्छी स्थितिवाले एक मित्रका मरा पत्र भज लिया। व स्पेक्टर नामके पत्रके सचाक थ। उनसे मैं विनियतमें मित्र भी चका था। उन्होंने रस्किनके सामान्य पत्राकी पुस्तकके रूपमें चार भागोंमें छपवाया था। य चार भाग उहान भरे पाम भज लिये। उनमें से पहला भाग आजकल में पड रल हू। पत्रामें जा विचार रस्किनन बनाय ह वे उत्तम ह। और हमारे अतक

१. इन अग्रणी पुस्तिकाका नाम है 'अटु लिख पत्र'। इसका गुजराती रूपान्तर सर्वोप्य नामसे प्रसिद्ध हुआ। गुजराती और हिन्दी संस्करण सर्वोप्य नामसे नवजावन ट्रस्टन प्रसिद्ध किये ह।

विचारमें व मिलन ह—इस ह तब भिन्न ह कि वार्द आज्ञान आभी ता यहा मान ले कि मन जा कुछ लिया है वह और आधममें हम जा कुछ करत है यह मव रस्किनके इन लयामें ग हा हमने घुराया है। 'बराया गल्वा अय ता सब गग ममय हा गय हाग। जा विचार या आचार जिम व्यक्तिस लिया गया हा उमका नाम छिपाकर उम हम अपना विचार या आचार कह ती कहा जायगा कि हमन उम घुराया है।

रस्किनने बहुत लिखा है। परन्तु उसमें ग इस बार ता म कुछ ही विचार यहा देना चाहता ह। रस्किन बहुत ह विद्वान् अगर तान (गिगा) न होनेसे बजाय घाटा भी अगर हा तो यह ज्ञान अच्छा है ऐसा जा माना जाना है उगमें गहरा भूत है। रस्किनका यह स्पष्ट मत है कि जो गिगा सत्वा है जा आत्माकी पहचान करानवाग है वही वास्तवमें गिगा है और वही हमें प्राप्न करना चाहिय। इसक बाद व कहा ह कि इस दुनियामें हर मनुष्यका तान चीजाका और तीन गुणाकी जबरन रहती है। जो मनुष्य इहें प्राप्न करके स्वका विचार मना कर सकता यह जावनका मत्र जीनेकी मन्वा कुजा ही नहीं जानता। एगलिए य तीन बाजें और तीन गुण गिगाके आधार हान चाहिय। हरएक मनुष्यकी—फिर वह वाग्ग हा या वाग्गिा—बचपनम म तानना हा चाहिय कि माफ हवा माफ पानी और माफ मिट्टी किम कहा जाय उहें किम तरह साफ रखा जाय और उना क्या फायदा होता है। रस्किनके बनाव हुए तान गुण ह गुणनता—गुणाको पञ्चानता—आगा और प्रम। जिन मनुष्यामें मय बगवद गिग आग नहीं है जा किमी अच्छी वस्तुका पहचान नहीं मना व अपन पमइसे गिगार हैं और आत्मानका—आत्माको पञ्चान सेने पर भिन्नेवाले आनका—उगमाग नहीं कर सकते। इमी तरह जिन मागामें आगावाग नहीं है यानी जा इहके चायके घारेमें मका रगत ह उनका हृदय बनी प्रमन्न रह ही नहीं मना। और जिनमें प्रम नहीं है यानी अहिमा नहीं है जा मारे जीवाका अपन दुःखी नहीं मान मने ये जीवका मत्र बनी माप ही नदा मने।

इस विषय पर रस्किनन अपनी चमत्कारी भाषामें बहुत विस्तारसे लिखा है। वह सब तो म किसी समय हमारा समाज समझ सके ऐसी भाषामें लिख पाया तो लिखूंगा। लेकिन आज म इतनसे ही सतोष कर लेना हूँ। साथ ही इतना म और कह दू कि जिस विषय पर हम सीधी-माली भाषामें विचार करते आय ह और जिसे हम अपन आचरणमें उतारनका प्रयत्न कर रहे ह उगमग उसी सबको रस्किनन अपना मजी हुई जीर समूह भाषामें अग्रज प्रजा समझ सके ऐसे ढंगसे अपने मामन रखा है। यहां मन तुलना दो अलग भाषाओंकी नहीं उसने है लेकिन दो भाषाशास्त्रियोंकी की है। रस्किनको भाषाशास्त्रका जा पान था उसकी बराबरी मेरे जैसे आदमी नहीं कर सकते। लेकिन एमा समय जरूर आयगा जब सिफ भाषाका ही प्रम व्यापक बनगा। उस समय भाषाके पीछ अपना सब-कुछ त्याग देनवाते रस्किन जस शास्त्रा हमारे यहां भी निकलेंगे और वे वसी ही असरकारक भाषामें लिखेंगे जसी असरकारक अग्रजीमें रस्किनन लिखा है।

यरवडा मन्दि

२८-३-३२

४

### रूसकी एक धम-परायण महिला

[यह एक थी महात्त्व देसाईका लिखा हुआ है।]

भाषीजी पिछले मात्र विलायतमें य सब वहाक प्रधानमंत्री जीर भारत मंत्रान अपनी लिखा हूँ एक एक पुस्तक भेंटके रूपमें उन्हें दी थी। जमें आत समय सायम गन जसी अनेक पुस्तकामें य दो पुस्तकें भा गांधाजा लाय य। और यहां पत्वन ही य दाना पुस्तकें उन्होंने पड डाया। भारत मंत्री सर सम्पन्न हारकी पुस्तक रनने बारेमें है। आज्ञा १८ साय पहा परायण एक बडा गार्ड छिडा। उममें एक और इम्पडन साथ था और हम गरीब हुए और इनके विलाप जमनीक

साथ दूसरे कुछ राष्ट्र जुग। लडाईकी घोषणा होत हा इन्फण्ट्री नौजवान सनाम भरना हाने लग। भारत-भर मर सम्बुद्ध होर भी मनामें भरता हूण। एकिन उनकी बारी देगम बाहर लडाईके मारच पर जानका नहीं जाई इम उनका मत अघार और व्याकुल रहने लगा। एम मौक पर लकी अधिनम अधिव संका किस प्रकार का जा मन्ती है इम पर उद्धान विचार किया और गाच विचारक बाद उद्धान रम जाकर यहाँम देगने लिये उपयोग साबित हा एमा हजामने भजाव लिये एम खाली समाचार-गस्यामें गरीब हानका इलाज किया। इमने लिये राज तान-चार घटका समय देकर एक धपमें उद्धान रना भाषाता अध्वयन पूरा किया और रममें एक महत्त्वपूर्ण नौकरी प्राप्त का सभी उनका मनका गति मिया। रममें इम स्यान पर तान वप ता काम करके इन्फण्ट्री सेवा करन जा अनुभव उद्धान प्राप्त किये उद्धाना वणन उनकी इम पुस्तामें हुआ है। रम कमा दुगा पीडित और दवा-बुचका दग था यका प्रजा कितना धम-परायण था जानका गुणभाव पत्रम हूण लिये रमके दर और बुचक हूण लगान भी कम निश्चलाक काम किये—इत गवना इम पुस्तामें बहुत अग वणन पढ़नका मित्ता है। जिस साध्या धम-परायण महिलाकी क्या आग दा जाता ह वह इम पुस्तकका अयन करण और रागल गड कर देनेवाग भाग है।

उा मन्त्रिणा नाम एलिजाबथ था। वह माराबाईकी तरह राज कुमारी थी। जमनीक एक रजवासी वह राजकुमारी था और रमके एक राजकुमारके माप उमरा विवाह हुआ था। राना विकारियाका नाम ता रम मर जानत हा हैं। मन्त्रिणा राना विकारियाका पुत्राका पुत्री था। इमलिय व लख राजा पत्रम जौत्रका पूरीकी पुत्रा यानी बहन हानी थी। उमके माता मित्ता उा पर रजवाइक रानि रियाजति मन्वार इन्फण्ट्री बजाय एक मन्वारा परिवारक मन्वार इन्फण्ट्री प्रयन किया था। और इत बातरी मात्रघाता रगा था कि मन्वारा और निमन्वारा गुणामें उनका परिवार मन्वारा प्रजाय जरा भी कम न रह। मित्ताका पार कुमारियामें स द्वारा कुमारी



इस विषय पर रस्किनन अपनी चमत्कारी भाषामें बहुत विस्तारसे लिखा है। वह सब तो म किसी समय हमारा समाज समझ सके एसी भाषामें लिख पाया तो लिखूंगा। लेकिन आज म इतनसे ही सतोप कर लेता हू। साथ ही इतना म जीर कह दू कि जिस विषय पर हम सीधी-सादी भाषामें विचार करते आये हैं और जिसे हम अपन आचरणम उतारनका प्रयत्न कर रहे हैं उगभग उसी सबको रस्किनन अपनी मजी हुई और समृद्ध भाषामें अग्रज प्रजा समझ सके ऐसे ढंगसे उसके सामन रखा है। यहां मन तुलना दो अलग भाषाओंकी नहीं की है लेकिन दो भाषाशास्त्रियोंकी की है। रस्किनको भाषाशास्त्रका जा पान या उसकी बराबरी मेरे जैसे आत्मी नहीं कर सकत। लेकिन एमा समय तब आयेगा जब मिक भाषाका ही प्रम व्यापक बनगा। उस समय भाषाके पीछ अपना सब-कुछ त्याग देनवाले रस्किन जस शास्त्रा हमारे यहां भी निकलेंगे और व वसी ही अमरकारक भाषामें लिखेंगे जसी असरकारक अग्रजीमें रस्किनन लिखा है।

यखडा मदिर

२८-३-३२

४

### रसकी एक धम परायण महिला

[यह केव श्री महात्वा देसाईका लिखा हुआ है।]

गाधीजी पिछल माल विलायतमें य तब वहाके प्रधानमंत्री जीर भारत मत्रान अपना लिखा हुआ एक एक पुस्तक भेंके स्ममें उन्हें दी था। जन्म आत समय साथम ज्ञान जसा जनक पुस्तकामें य दो पुस्तकें भा गाधाजा लाय य। और यहां पहुंचत ही य दाना पुस्तकें उन्हां पठ गये। भारत मत्रा सर सम्यअठ हारका पुस्तक बनवे बारेमें है। आजम १८ सां पन्थ परायण एक बडा गन्त छिडा। उममें एक आर पन्थक साथ फाग और रस गराक हुए और इनक विलाफ जमनीके

गून करनेवांग हत्यारा पकडा गया। उम पर मुकदमा चला और उस मौतकी गजा हुई। गूनी स्वका एक सस्वारी और शिक्षित युवक था। गूनाके गिण तिरस्कार या नफरत पदा होनेके बजाय गलिजायेके मनमें धमनिष्ठा उमड आई। अपने माता पिता और पतिस उसन यह मीमा था कि मूयुके समय वर जोर दुम्नका भू जाना चाहिय और मरनवालेका ईशरवा चितन करनेका मीमा दिगनमें मद करनी चाहिये। गलिजाये अपने पतिव गूनीसे मिन्न अम्में गई।

गूनीन पूछा आप कौन ह ?

गलिजाये मैं प्राड डपूकी विधवा पत्नी ह। तुम्हारा उन्हा क्या अपराध किया था ?

गूनी मुझ आपका गून नहीं करना था। मने कई बार आपका आपन पतिव माय दगा था। उम समय भी मेरे हाथमें वम था। ऐगिन आप प्राड डपूके माय था इमलिए मने वम नहा फेरा। इम बार उहे अकेल पावर मुय यह मीमा मि गया।

गलिजाये ऐगिन म आत्मा तुमन यह नटा सोचा कि मरे पतिव गून करव मय जिग खनमें तुम मरी मौतस भी गजाग बरी दगा कर दाग ? निगोंप डपूका मारन ममय तुम्हारे गिमें जरा नी कपकपी नहीं छुगी ? ऐगिन जो हुआ गा हुआ। अब तुम्हारी मौत नज्वाव है। एगिण तुम अपना करतूत लिए पत्तागा और प्रभुग क्षमा मागा। मैं तुम्हारे लिए वादवकी एक प्रति गर ह।

गलिजायेने गूनीके हाथमें बाब रगा तय गूनीन एक हाथमें एर पुगार रगा और कहा

म यह वादव पडगा। और आप मरी यह डाकरी पडियगा। इम गपरीने आपको पना कगा कि मुझ यह गून क्या करला पडा, देका स्वक बनानेमें बापा डागनवांगका नाग करनेकी प्रतिगा मने क म नी और क म उका पान किया।”

एलिजाबेथका विवाह उस समयके रूसके राजा भाई ग्राउ उधक सजके साथ हुआ था। और एलिजाबेथकी सबसे छोटी बहनका विवाह रूसके राजाके यवराजके साथ हुआ था। यह यवराज बादमें रूसका राजा बना। इस तरह दोनों बनी बहन काका और भतीजके साथ ब्याही गई थी।

एलिजाबेथका समुद्र जल रुमका राजा था जब रूसके अराजक तावानी दलक एक आत्मीन उम्का खून कर लिया था। रुममें ऐसे खून हात ही रहत थ। दगाकी सारी प्रजा सन्मिसे राजाआक अयाय और अत्माचारका गिकार बनी हुई थी। और रुम नामसे छुनके लिए प्रजाक नोजवान लोगान नामक बगना नाम करतका रास्ता खाज निराला था।

एलिजाबेथ विवाहक बाद रुम गई और नस-पत्त बय तक उमका जीवन मुरमें बीता। उमका पति मास्काका गवनर था। जब ग्राउ ड्यूक सज मास्काका गवनर था तब उसका भतीजा रूसका राजा था। १९०५ में जब जापानक साथ रूसकी लड़ाई छिडी तब दगाको प्रजाके बचम बचानक खयालन काकात भतीजको सुझाया कि प्रजाको विधान-सभाकी बहिनग दी जाय। या ता काका और भनाजा दाना राय करनकी पुराना पद्धतिक ही माननवाय थ लकिन कारणत समयमें पहले बतवके लिए य सुझाव भतानक सामन रखा था। यह सुझाव राजान माना नही इसलिए ग्राउ ड्यूकन गवनरक पत्ने इस्नाफा द लिया। रूसीफा दकर ब मास्को गहर छोडनकी तयाग कर गय था आधा सामान महमें स हटा भी दिया गया था इतनमें उमका खन हो गया। एलिजाबेथ मास्वामें गहर लडामें मर करनके विचारन एद गवाभत्र गानक प्रयत्नमें लगी थी उनी बीच य घटना पया। वह इन सवाभत्रमें जानक लिए बाहर निरग हा रहा था कि राजमहक आगनमें एक नयनर घटारा मुनार्द पया। बाहर जाकर उमन दमा कि महके दरवाजा और विडकियाके काच टट गय ह जिस बगामें उमका पति बदन जा रहा था वह चकनाचर हा गई है काचवान धायल पडा है और उमक पतिके प्राण-समर उड गय है।

रून बरनवाला हत्यारा पकड़ा गया। उस पर मुफ्तमा चला और उस मौतकी मजा हुई। सूना मरका एव मस्कारी और गिणित मुबक था। सूनाके लिए तिरस्कार या नफरत पदा होनेके बजाय एलिजाबथके मनमें धमनिष्ठा उमड़ आई। अपन माता पिता और पतिम उसने यह सीखा था कि मृत्युव ममय वर और दुःखनाको नून जाना चाहिय और मरनेवाल्का ईश्वरका चितन बरनरा मीरा दिगानेमें मर करनी चाहिये। एलिजाबथ अपन पतिके सूनीस मिलन जन्में गई।

सूनीने पूछा आप कौन ह ?

एलिजाबथ म घाड़ डपुक्की विधवा पत्नी ह। तुम्हारा उहाने क्या कराय किया था ?

सूनी मुझ आपका रून नहीं बरना था। मने बड़ बर आपका आपन पतिके साथ दगा था। उम ममय भी मरे हाथमें बस था। एकिन आप घाड़ डपुक्क साथ थी इगणित मने बस नू फेंका। इम बार उह अलग पाकर मुझ यह मीरा मिल गया।

एलिजाबथ एकिन मने आत्मा तुमने यह नहर साचा कि मरे एकिरा रून बरक मुसे जिना रखनमें तुम मरी मौतने भी ज्यादा बुरी दगा बर दाग ? निर्णय डपुक्का मारन ममय तुम्हारे जिन्में जरा भी बगवर्षा नहीं एनी ? एकिन जो हुआ ना हुआ। अब तुम्हारा मौत नकनीत है। इमलिए तुम अपनी बरनूतक लिए पछाआ और प्रभुम क्षमा मागो। मैं तुम्हारे लिए वादबन्का एक प्रति लाई हू।

एलिजाबथन सूनीक हाथमें बादबन् एनी तब सूनीन उमक हाथमें एक पुगाव रगा और कहा

म यह वादबन् पडगा। जोर आप मरी यह डायरा पडियेगा। इम डायरीमे आपको पता चलगा कि मुझ यह रून क्या बरना पना, एका रखन बनानेमे बापा डाननवालाका नाग बगवकी प्रतिआ म न बग की और बसे उमरा पानन किना।”

दानान् एक-दूमरम् विना ली। मृत करतवात्रा नौजवान भी घम पर थका रहता था। नायद यह खून भा उसन दणक लिए एसा करनकी इस्वरका आना है यह मान कर ही किया होगा। लेकिन एलिजाबथका कामन् घमनिष्ठाको देखकर उस नौजवानकी घमनिष्ठा भी नायद बन्धी होगी। उमर फामोकी मजा दनवाल जायाघागे सामने क्या मुझ अपना कोई बचाव नहीं करना है। मन ग्रान् डचूकका विधवाके सामने अपना हृदय खोलकर बातें का ह। व भी इसकी गवाही देगा।

एलिजाबथन अपनी जमीन-जायलाद अपन रहन — विवाहका सीभाग्य चिह्न अगठी तक — बच डाने। इगसे जो पत्नी मिला उसका सीसरा हिस्सा उसन रायकी लिया एक तिहाई घमकापोंके लिए — अस्पनाग देवाकानो अनायालमा क्षयरोगियाके आरोग्य धामा वगराके लिए — दिया और एक तिहाई सग-सम्बन्धियोंके लिए दिया। तन्म राजमहत् छाड लिया और ब्रह्मचारिणियाके लिए एक मेवाश्रम खोलकर उसमें रहन चली गई। जाम तौर पर एसे आश्रममें रहनवाल लोग बवन् पूजा-यात्र करन और माला करनमें ही गीत रहत ह। लेकिन एलिजाबथन अपन आश्रममें जितना जार प्रायना और पूजा-यात्र पर दिया उतना ही मन्नाश्रम पर मा लिया। उसन खुन् जीवनभर ब्रह्मचारिणा रहनकी गीमा की लेकिन दूमरी स्त्रियाके लिए इस दी-ताका अतिवाय नहा बनाया। आश्रममें सक्ता स्त्रिया गामिन् हुइ उनम से बामरन जीवनभर ब्रह्मचारिणा रहनकी गीमा ला थी और दूसरी स्त्रियान आश्रममें रहनके ममम तककी दाभा गी था। आश्रममें रहनवात्री इन स्त्रियामें राजकुमारिया था मस्तारी और गिणित परिवाराकी स्त्रिया था जार विमान-वगका स्त्रिया मा था। आश्रम चगनके लिए पमकी भाव मागन बढी जाता नहा पन्ता था। उनका काम ही एसा प्रसिद्ध हा गया था कि अनर स्यातान म्म आश्रमकी नसोंकी माग जाती था आश्रमका अनायात्य विभाग मात्र यूरोपमें अति उत्तम माना जाता था और उमक निवाहके लिए दानकी बात चली आता था।

एलिजाबेथ बुढ़माताका पद सम्भालन हुए भी एउ अल्पत कुत्त नम मानी जाती था।

एलिजाबेथ आश्रम जीवन जितना मत्रामय था उतना ही तपामय भी था। मार तिन सतत वाम वरतक वाद वह धयक अनेक रागियाका तगती थी आश्रमक अतर विमागाती मुत्तवान त्नी था तथा आश्रमकी मारी ध्यवम्या करती था। तेमे अनेक वामामे निवृत्त जानके वात् रातरा वत्तगा ममय वह ईश्वरा ध्यान और भजनमें बिताना थी। पडी दा पडो मानी था ऐतिन एक मुत्त पटिय पर — जिम पर न तो कुछ बिज्जनेका रहता था न आङ्कनका और न गिरगन रगनका कोर् तरिया रहता था। भाजनमें माम मत्तिग ना उमने एक लम्ब अम्मम छात् लिय थे। जिम प्रतर एलिजाबेथके जावनमें भविष्याग जीर कमयागका मुम्त हा गया था उमा प्रतर उगर आश्रममें ना एत दाना यागाहा मुमेल हा गया था।

जप्तानर गाय रूग्नी त्हाई चत् रती थी उर ममय एलिजाबेथक आश्रमन त्गमराके अतर काम लिय थे। उन त्तिना धायत्तकी मेवार त्तिन आ दान मिन्ने थे उनका त्तिमाव रगन और हरएक दानका पदुर भजनेका नीरग वाम भी उगके आश्रमन हा अपन गिर ल रगा था। १९१४ की त्हाईमे भा एलिजाबेथन आश्रमका मवा त्तिना आग की था। ऐतिन उगके जावनका कडाग कडा परीगा अभा आग हानवागी था।

हम देख कर ह कि एलिजाबेथ जमनीर एउ राजपगनका राज कुत्तरा थी। त्हाई चत् रती हा उग ममय — और गाय नीर पर माग्यात् माव-मगग्गी त्हाई चत् रती हा उग ममय — नारा आर त्ति-शवद्का हवा मरय रहता है। एग १९१४ की त्हाईमे जमनीर तिगफ ल रहता था। त्तिगा बहाव गगरे मनमें यद त्ति वेग दृभा कि जमनीका यह राजपुमारी छिग त्तिमें जमनीरता मत्त ना म्ना करती? लाग जग भी जमनाका दगन वहा उनर पाणे पद जग उम् परेगन करन और मार भगत थ। एक बार गुधारी एक टोंग एलिजाबेथके आश्रम पर चढ़ आई और आश्रमका जग्याका

दोनाम एक-दूसरेसे विदा ली। खून करनेवाला नौजवान भी धम पर श्रद्धा रखता था। गायद यह खून भी उसने देखे लिए ऐसा करनेकी ईश्वरकी आज्ञा है यह मान कर ही किया होगा। लेकिन एलिजाबथकी कोमल धमनिष्ठाको देखकर उस नौजवानकी धमनिष्ठा भा गायद ब ग हाया। उसने फामाकी सजा देनवाले गायदांशके सामने कहा मुझ अपना कोई बचाव नहीं करना है। मन घाड डचूकका विश्वाके गामने अपना हृदय खोलकर बात की ह। व भी इसकी गवाही दगी।

एलिजाबथन अपनी जमान-जायन्तद अपन गहन — विवाहका सोभाग्य चिह्न जगठी तक — बच डान। इससे जो पसा मिला उनका तीमरा हिस्सा उसने राज्यको दिया एक तिहाई धमकायोंके लिए — अस्पताला दवाखानो अनाथाग्या दयरोगियाके आरोग्य धामा बगराक लिए — लिया और एक तिहाई सग-सम्बन्धियाका दे दिया। सुदन राजपन्त छाड लिया और ब्रह्मचारिणियाक लिए एक सेवाश्रम खोलकर उमम रहन चगी गई। आम तीर पर एसे आश्रममें रहनवाले लोग बच पूजा-याठ करन और माला फरनमें ही लीन रहते ह। लेकिन एलिजाबथन अपन आश्रममें जिवना जार प्राथना और पूजा-याठ पर दिया उत्तना ह। सेवाधम पर भी लिया। उसने खु जीवनभर ब्रह्मचारिणी रहनेकी दीक्षा की लेकिन दूसरी स्थियाके लिए इस दीक्षाका अनिवाय नहा बनाया। आश्रममें सजडा स्त्रिया गामिन हूइ उनसे बासरन जावनभर ब्रह्मचारिणा रहनको दीक्षा ग थी और दूसरी स्त्रियान आश्रममें रहनक समय तककी दीक्षा गी या। आश्रममें रहनवागी इन स्थियामें राजकुमारिया था मस्कारी और गिदित परिवाराका स्त्रिया था और रिमान-खगकी स्त्रिया भा था। आश्रम चलानके लिए पसेको भाव मागन बनी जाना नना पन्ता था। उनका काम ही एसा प्रसिद्ध ह। गया था कि अनेक स्थानामे कम आश्रमका नगर्की माग जाती या आश्रमका अनाथाग्य विभाग सारे यूरोपमें अति उत्तम माना जाना था और उयन निवाहक लिए दानका बाण चगी आती थी।

एलिजाबेथ माय क्षरर प्रणाम किया। इमक बाद एलिजाबेथ उन लामे कहा अब तुम्हें जा चाहिये सा गोज लो और ले जाओ।

उत्तम मार आथम क्षरर डाग लकिन उह ले जान जमा कुछ मिन नहीं। तन बाहर आकर अना माघियासे उहाने कहा 'अरे यह ता कवल एव निवम्मा आथम है। यहा दूसरा कुछ भा नहीं है।

यह तूफान ता इम तरह आया और चला गया। लकिन कुछ मिन बाद दूसरा तूफान आनवाग था। मममे राजाकी हटाकर प्रजान रायगता मत्ता अपन हाथमें ल ला थी। लकिन प्रजामे भी डा दन हा गय थ। जिन दने रायगता हाथमें थी थी उमम मा अधिष गकिनवाला एन दूसरा दल उर पहा हुआ था। पहल दवाए एलिजाबेथ पाग आय और नम्रतासे उम ममज्ञान गग

अब आपका आथम सतरेमें है। प्रजा पागल बन गई है। वह आपकी सवाओकी नहीं ममन मक्ता। वह तो इतनी ही बाग जानता है कि आप एर बार राज-परिवारमें थी और राताका घडो बहन है। वह आपसे प्राण नन पर तुगी हुई है। कृपा करके आप आथम छाड दीजिय और राजमहलमें आ जाइय। वहा आप पर बाई आव नहा आपगा।

एलिजाबेथ जयाब दिया मैंन ता आथमका अपना जानन अरन कर लिया है। मैं मरगा ता आथममें और जीऊगा ता आथममें।



प्रयत्न करने लगी। गहरके नगरसेठको पता चलते ही वह आश्रममें जा पहुँचा और गडाको उसने बिलख दिया। एलिजावथकी छोटी बहन हसकी रानी थी। उन्कि उसके साथ बड़ी बहनका अधिक मित्रता नहीं होता था। उसके साथ ही आगमें घी पड़नकी तरह हसमें प्रजान राजाके विरुद्ध बलवा खडा कर दिया। राजाको राजगद्दी छोडकर भागना पडा। उस सबके बावजूद भी एलिजावथन जिस सवाकी दी गयी थी उसमें वह जी जानसे लगी रही। लेकिन दगाइयो पर फिरस दगा फसा करनकी सनक सवार हुई। कदखान ताड डाल गय। उनसे बाहर निकले हुए कदियो और दूसरे फमानियोन एलिजावथके आश्रमको चारा ओरसे घर लिया। एलिजावथ बाहर निकल कर सबके सामन अकेली सडी रही। ऊँची आवाजमें उसने सबसे कहा 'गात हो जाआ। तुम्ह क्या चाहिये? क्या तुम यह मानते हो कि जमनीकी मन्द करनके लिए यहा कोई छिपा पडयत्र हो रहा है? अन्दर आओ और दबो कि यहा क्या काम चल रहा है। अन्दर अगर हथियार गोला-बारूद जामूस वगैरा छिपा कर रख गय हा तो तुम जरूर उन पर कजा कर लो। लेकिन खबरदार पाच आदमीसे ज्यादा कार्क अन्दर न आना!

फमानियोके टोलेन जोरसे चिल्लाकर कहा 'हमें कुछ नहीं मुनना है। हम आपको कद करत ह। चलिय हमारे साथ।

एलिजावथन गात और स्वस्थ मनन उत्तर लिया 'म तुम्हारे साथ चलनका तयार हूँ। उन्किन इस मस्याकी म कुम्माता हूँ। इसलिए चउनसे पहूँ मझ दूसरी किसी बहनको इमका अधिकार सौंपना चाहिये और मस्याकी सारी व्यवस्था कर देनी चाहिये।

एसा कहकर एलिजावथन आश्रमकी भारी बहनाको प्रायना मन्दिमें जमा हानक लिए कहा और फमादियोके टालेमें स पाच आत्मियोके हथियार बाहर रखकर आश्रमके भानर आनका कजा व गग चप हा गय और मझस वामे कर लिय गय आत्मियोका तरह उमक पाछ पीछ अन्दर चल गय 'हमाके त्राँसके सामन उन्हान भी

एलिजाबेथ का माथ झुंझकर प्रणाम किया। इनके बाद एलिजाबेथ उन लागी गई। अब तुम्हें जा चाहिये ता राज गे और ल जाजा।

उहान मारा आश्रम राज डाग केबिन उहें क जान जमा कुछ मिया नहा। तब बाहर आवर अग माथियासे उहाने बहा अर घट ता बवल एर निरम्मा आश्रम है। बहा दूसरा कुछ भी नहा है।

यह तूफान तो इन तरह आया और चला गया। लेकिन कुछ दिना बाद दूसरा तूफान आनेवाला था। हममें राजाका हटाकर प्रजात रापता गता अपन हाथमें ल ली थी। लेकिन प्रजामें भी दा दू हा गय थ। जिग दूने रापगता हाथमें गे था उगम मा अधिक गक्तिवाला एर दूसरा दल उठ मडा हुआ था। पहल दूराग एलिजाबेथ काग आय और नम्रनाम उग गमज्ञान गग

अब आपका आश्रम गतरमें है। प्रजा पागल बन गई है। वह आपकी सेवाआका नहा ममग मरना। वह तो इतनी ही जान जानती है कि आप एक बार राज-भरिवारमें था और रानाकी बडा बहन ह। वह आपका प्राण लन पर तुली हुई है। कृपा करके आप आश्रम छाड दीजिय और राजमहलमें जा जाइय। वहा आप पर बाइ आष नग आगया।

एलिजाबेथने जवाब दिया मन ता आश्रमका अपना जावन अगन कर दिया है। मैं मरुगा ता आश्रममें और जाऊगी ता आश्रममें। मन फिर, राजमहलका आगरा केनके लिए राजमहल नहा छाना था। अगर आप गग मर आश्रमकी रणा न कर मरन हा ता उन ईश्वरक भराव छाड दाजिये।

दग प्रकार धारा तरे आग ला हुद था लेकिन आश्रमका नाम हमगाका तरह निरमित रूपग चला रहा। एलिजाबेथका आनवाग मृगानका आगाता ता मिला लग हा गई था। उग मोर पर अनन मितका लिए एक पत्रमें उमन बनाया

एग समय ही ईश्वर पर रहा हमारा थदाकी पराणा हागा है। हम — हमारा प्यारा हम — तूतू कर बिगर रहा

प्रयत्न करने लगी। गहरा नगरसेठको पता चलते ही वह आश्रममें जा पहुँचा और गडाको उसने बिखेर दिया। एलिजाबेथकी छोटी बहन रुसकी रानी थी। लेकिन उसके साथ बनी बहनका अधिक मिलना नहा जाता था। इसका साथ ही आश्रममें भी पड़नेकी तरह रुसमें प्रजापति राजाके विरुद्ध बलवा खड़ा कर दिया। राजाको राजगदी छोड़कर भागना पडा। इस सबके बादजद भी एलिजाबेथन जिम मेवाकी दास्या नी थी उसमें वह जी जानसे लगी रहा। लेकिन दगाश्या पर फिरसे दगा-फना करनका सनक सवार हुइ। कदखान ताँ डाले गय। उनसे बाहर निकले हुए कदियो और दूसर फमानियान एलिजाबेथके आश्रमको चारा ओरसे घेर लिया। एलिजाबेथ बाहर निकल कर सबके सामन अकेली खडी रही। ऊँची आवाजमें उगन मवसे कहा 'गान हो जाआ। तुम्ह क्या चाहिये? क्या तुम यह मानते हो कि जपनीका मन्त्र करनक लिए क्या कोई छिपा पडमन्त्र हा रहा है? अन्दर आओ और देखो कि यहा क्या काम चल रहा है। अन्दर अगर हथियार गाँ-बाँ- जाभूस बगरा छिपा कर रख गय हा ता तुम जरूर उन पर कजा कर लो। लेकिन खबरदार पाब आदमीसे ज्यादा कोई अन्दर न आना।'

फमानियकि टोकेन तोरने बिलगकर कहा 'हमें कुछ नही सुनना है। हम आपको बद करत ह। चणिय हमार साथ।'

एलिजाबेथन गाल और स्वस्थ मनसे उत्तर दिया 'मैं तुम्हारे साथ चणनको तयार ह। लेकिन इस सस्याकी म कुटमाता ह। हमनिय चणनस पहन मय दूसरी किसी बन्तका इमता अधिकार सौपना चणिय और सस्याकी सारी यवस्या कर देनी चाहिय।'

एसा बहकर एलिजाबेथन आश्रमका भागी बहनाका प्राथना मन्त्रिमें जमा हानक लिए कहा और फमानियकि टोकेन स पाब आन्निमासे हथियार बाहर रखकर आश्रमक भातर आनका कहा। ब गग घप हा गय और मप्रस वामें तर न्य गय आन्निमाका तरह उमक पीछ पीछ अन्दर चण गय 'सावे जानक सामन उन्हात भी

एलिजाबेथ माय झुंवर प्रणाम किया। इमक बाद एलिजाबेथ उन गगामे कहा 'अब तुम्हें जा चाहिये सा राज गे और ल जाआ।

उहान मारा आश्रम छात्र डाग लेकिन उहें न जान जमा कुछ मिया नया। तब बाहर आकर अरा माधियामे उताने कहा अर यह ता बवल एक निरम्मा आश्रम है। यह दूररा कुछ भा नहा है।

यह तूफान ता इग तरह आया और चला गया। लेकिन कुछ जिना बाद दूररा तूफान आनवाग था। रूममें राजाका हठाकर प्रजाने रायवा गता अपन हाथमें ल ली था। लेकिन प्रजामें भी दो दल हा गय थ। जिन दलन रायसता हाथमें ली थी उनम भी अजिन गतिवाग एक दूररा दल उठ गढा हुआ था। पहल दलका एलिजाबेथ पाम आय और तन्ननाम उम ममज्ञान गग

अब आपका आश्रम गतरेमें है। प्रजा पागल बन गई है। वह आपका सेवाआका नहीं ममज्ञ सुक्ती। वह ती दलनी ही वान जानता है कि आप एक बार राज-परिवारमें थी और राजाकी बडा बहन ह। वह आपके प्राण लन पर तुगी हुई है। हुपा करके आप आश्रम छाड दीजिय और राजमहलमें आ जाइये। वहा आप पर काई आच नहा आयगा।

एलिजाबेथ जवाब दिया मन ता आश्रमका अपना जावन आग कर दिया है। म मरुना ता आश्रममें और जीऊगा ता आश्रममें। मन फिरत राजमहलमें आगरा लनक लिए राजमहल नहा गग था। आर आप लाग मर आश्रमकी रना न कर सकन हा ता उम ई-बन्क भरात छाड दीजिय।

एग प्रकार तारा तरह आग गता हुई था, लेकिन आश्रमका पाम हमाराका तरह नियमित रूपन चला गग। एलिजाबेथका आनवाग दूरराका आगाहा ता मितन गग हा गई था। उत मौर पर अपन मित्रता लिए एक पत्रमें उमन बताना

एग समय ही ई-बर पर रहा हमारा श्रद्धाका पराणा होती है। रूम — हमारा प्यारा रूम — टूट-टूट कर बिगड रहा

है। म आसपास विनाश बरबादी और तबाहीके सिवा और कुछ नहा देखती। फिर भी मरी यह मूढा अटल है कि कडी कसीटा पर मनुष्यको कसनवांग ईश्वर और दयालु कृपाल ईश्वर एक ही है। कल्पना करा कि एक भयकर तूफान चला आ रहा है। तूफानमें सुंदर और भयकर दोनों आंग हात ह। तूफान आन पर कुछ लोग भाग-दौग मचाते ह कुठ गंग डरसे ही मौनके गिफार हा जाते ह और कुछ आंग उम भयकर तूफानमें भगवानके रूप — भयकर — रूपका दर्शन कर सकत ह। एमा ही तूफान आज हमारे चारों तरफ फग मचा ह। हम ब्रह्मचारिणिया तो हमारा ईश्वरका प्रायनाम कामकाजम और मवामें लगी रहती ह। इसलिए हमारी आंग भा अखड आर अग्ट है। और जो भा घटनायें घटता ह उन सबमें हमें ईश्वरकी दयाके ही दान हाते ह। ऐसे समयमें हम आंग रखकर जी रहे ह यही क्या एक चपत्कार नहा है?

कुछ जिन बांग बांगविक लोगान जिनके हाधम अब रांगको सत्ता आ गइ था आंगम पर चगाई की। प्रजामें एंगिशावथ और उसका आधम एतना प्रिय हो गया था कि आधममें तो कोई उमका बांग भी बाका नही क मकता था। इसलिए बालंगविकान एक बहाना निकारा — उम हुकम दिया कि अमक स्यात पर राजपरिवारक लोग है। हम आपका बही ग जायग। आप तमार हा जाइम।

एंगिशावथन अपनी सेविकाआमे मिगनकी इजाजत मागा। लकिन उस इजाजत नही मिला। आधमकी एक दूसरी बहनक साथ उस ल जाकर रंगक जिनम बटाया गया। रास्तेस एंगिशावथन आंगमकी बहनाका बिगका पत्र लिखा। जिन जगह राजपरिवारक कुछ आंगी थ वहा एंगिशावथरा ल ता जाया गया। लकिन व मव कंग थ। न ता उनक सानमानका गिकाना था न पहनन आंगनका गिकाना था। मव लाग मौनकी गह दंगत बठ थ। राता और राता — एंगिशावथका छाटा बहन — दूसरी जगह कंग थ। १७ जुलाइ, १९१७ क जिन राजा और राता दानाका हया का गंग।

१८ जुलाई का एलिजाबेथ और उसके दूसरे माधियांकी बारी आई। एलिजाबेथकी उसके साधियाका और उसका साथ आई हुई सहलीकी आवा पर पट्टी बांध दी गई और सबका पाम ही पड हुए लाम्बे मन्बक डर पर फेंक दिया गया। किसाने उसमें सुगग आगई और कुछ ही क्षणमें एव भयकर घटाकेके साथ सबकी धजिया उड गइ। गेटेके डर पर फेंके जाने पर एलिजाबेथक महंग जो गल निकले, उह दूर गइ एव विमान गुन रहा था। व गल व हे भगवान इन योगाका समा कर। इह मान नही है नि मे क्या कर रहे ह।

थरबडा मंदिर

४-४-५२

५

## आकाश-दान

१

सत्यक पुजारीके रोगा बाई अन ही नहीं है। सत्य-नारायणके दगा बननेके लिए यह अपाको कभी बूझा नहीं मानता। जो मनुष्य अपा हर काम सत्यरूपी ईश्वरके लिए ही करता है जो हर तरह सत्यकी ही लपता है उगव भागमें युद्धापा कभी दराबट बनता ही नहीं। सत्यार्थी—सत्यता पुजारी—अपना च्येपरी राजके लिए मंग अन्नर और अमर हा रहता है।

एही मुन्दर स्थिति ता में बरगती भाग रहा हू। जिन ज्ञानका लकर व सत्यकव अधिक पाम ग साता ह एता मुझे लगा उसे पानक प्रदानमें मेरा युद्धापा कभी बाधक नहीं बना। एता ताजा आहरण भरे जीवामें आकाश-दानता है। आकाशा नामान पान पानकी इच्छा हृदयमें ता वगत कर पदा हुई थी। जिन मन मान लिंग या सि हायमें लिंगा हुआ काम मुने दगमें गतरा नहीं उतरने

रातको आकाशमें हमें जा असह्य तारागण दिखाई देते ह उन सबका भी इस जगत्को टिकाय रखनमें स्थान है। इस प्रकार हमारा इस विश्वके सारे जीवोंके साथ सारे दृश्याके साथ गहरा सम्बन्ध है। और एक-दूसरेके सहारे हम टिके हुए ह। इसलिए आकाशमें विचरनवाले जिन प्रकाशमय तारागणोंके सहारे हम टिके हुए ह उनका धाडा-बहुत परिचय हमें करना ही चाहिये।

आकाशका परिचय करनका एक खास कारण भी है। हममें यह कहावत चलती है दूरके ढोल सुनावन । इस कहावतमें बड़ा सत्य भरा है। जा सूर्य दूर होनके कारण हमारा रक्षा करता है उसी सूर्यके पास जाकर अगर हम बरें ता उसी क्षण जलकर हम राख हुआ जाय। यही बात आकाशमें बसनवाऽ दसरे दिव्यगणोंके बारेमें भा सच है। हमारे पासनी जनक चीजाके गण-गोप हम जानत ह इसलिए कभी कभी हम उनस ऊब जाते ह उनके दायाके स्पर्श हममें भी वे दाप आ जाते ह। लेकिन आकाशमें रहनवाऽ सूर्य चन्द्र नभय वगैरा देवगणोंके बक्ऽ हम गण ही जानते ह। उह स्तनमें हम कभी भक्त ही नहीं उनका परिचय हमें कभी नकसान पचा हां नहीं सकता और इन देवाका ध्यान धरते हुए अपनी कल्पना-शक्तिका हम नीतिका पोषण करनवाऽ विचाराकी मदत्स जितना दूर तक ऽ जाना चाहें ल जा सकत ह।

यह बात बिना किसी शकाके कही जा सकता है कि आकाश और हमारा बीच जितनी दूरावटें हम रखत ह उतना ही नकसान हम अपन गरीर मन जीर आत्माको पहुँचाते ह। अगर हम कुदरती तरीकेस जीवन बितायें तो चौबीसा घट आकाश नीच रह सकत ह। एसा करता समभव न हा ता जितन अधिक समय तक हम आकाश नाच रह सकें उतन समय तक हा रहें। आकाश-गान यानी तारागणोंका दान ता रातमें ही हा सकता है। और उनका अ-उस अच्छा दान टकर ही बिना जा सकता है। इसलिए जा मनुष्य हम दानका पूरा पूरा लाभ उठाना चाहता है उस ता साथ आकाश नाच ही

मोना चाहिये। आसपास यदि ऊँच मरान या पेड़ हा ता के दम दानमें खतरा डालत ह।

बालकाना और बढाको भी नाटक और उनके भीतर दिग्वाये जानवा दृश्य वस्तु पग आत ह। लेकिन जिम नाटकी याजना कुरतने हमार लिए आकाशमें का है उमकी बराबर मनुष्यवा रचा हुआ एव भी नाटक नडा कर मरता। इसके सिवा नाटक घरमें हमार आये विगडनी ह पपगमें गयी हवा जानी है और हमार चा चरन विगडनकी भा बहुत गभावना रनी है। इनके विगड कुरतन नाटकवा रनमें तो लाभ ही गम है। आकाशका दयनस आरसा गति मिनी है आकाशा दान करनके लिए बाहर सुग्में रहना अनिवाय है इसल हमार पेयाका गुड हवा मिनी है। ओ आकाशा दान करनके विगाता चा-चरन विगटा हा एसा आज तन बभा गुना गही गया। या या हम ईश्वरके दम बम-रागा अधिन ध्यान करन ह रया रया हमारी आत्माका अधिन विगाता हा हाता है। जिम राज म विचार और गये मरन रानमें आन हा वह बाहर सुग्में मापर आकाश-दानमें लीन होवा प्रपन करके ल्य। उम कुरत निर्णेप विगाता अनुभव हागा। जय हम आकाश इम महा-दानमें गत हा जान ह तब हमें एसा गुनाद पहना है माना आकाशक म सब निष्पगण ईश्वरकी मूक स्तुति पर रह ह। जिमके पाम आये हा बहु आकाशमें हानवाक यह नित-नया नाच दग। जिमके पाम धान हा पर दन असम्य गधवोंका मूक गान गुन।

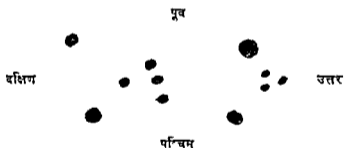
अब हम आकाशकी थोडी पहचान करे अथवा मन आकाशा जा बहुत हो बाडा ज्ञान प्राप्त किया है उामें म सब गायिकाका मागार बनाऊं। सब ता यह है कि पची मूय बर यगराका घोषा गामाय जान प्राप्त करके बा हा आकाशा दान किया जाय ता टोक हागा। हा मरता है कि म यल जा कुछ निरन-ग ह यह सब बादासाहब बा-बाके परिषदमें आप दृण आश्रमके धारण जात हा। तेमा ही ता जस्टा ही माना जायगा। म ना आश्रमके छा-बद, नद-पुरान सभी लोगके लिए यह लिए रना



है। इसमें जिसे रस आयगा उसके लिए तो यह बिल्कुल आगान हो जायगा।

प्राथमिक तुरत बाद आकाश-ध्यान करना अच्छा है। इसके लिए बीस मिनटसे अधिक समय एकमात्र देनकी जरूरत नहीं है। समयदार आदमी तो इस ध्यानको प्राथमिक एक हिस्सा ही मानगा। घरसे बाहर सानवाते अकेल जाओ जितन समय तक आकाशका ध्यान करना चाहें कर सकते ह। कुछ ही समयमें इस ध्यानमें गेन होकर वे सो जायग। रातमें कभी नींद खुल जाय तो फिर थोडा दशन कर लें। आकाश हर पक्ष धूमता दिखाई देता है इसलिए पक्ष पक्ष पर उसका दान्य बरसता हा रहता है।

आठ वा आकाशकी आर देखनसे पश्चिममें एक भय सुंदर आकृति दिखाई पडगी।



यह आकृति पश्चिममें रहेंगा। म पूवमें मिर रखकर सामन देखता ह। इन तरह जा देखगा वह हम आकृतिका कभी भूत ही नहीं मवगा। आजकल गकल पक्ष चल रहा है इसलिए यह तारा-मंडल और दूमर तारागण यो पक्षे दिखाई देत ह। फिर भी यह तारा-मंडल इतना तज है कि मरे जन मानववालेका इस खोजना बहुत आसान पत्रा है। इन मंडलके बारेमें हमार देशमें और यूरोपमें क्या भायता या यह आग लिखगा। इस समय ता इतना ही कहूंगा कि इन तारा मंडलक स्थानका वजन वेत्तमें पड कर गेकभाय तिख महाराज कर्त

गमयकी खोज कर सके थे। आश्रममें पुष्पवाता जो सप्रह है उसमें स्व० दीनितकी लिया एक पुष्प है। उसमें आकाशके नक्षत्रा तात्परणा वगैरह वारमें बहुत जानकारी दी गई है। मरा काम गिफ इम वारेमें आश्रमवागियाकी लिखनी पत्र करा दता है। बादमें ता आश्रम वागियामे मझे ही अधिप जाननका मिलेगा। मेर लिए आकाशक य नक्षत्र ईश्वरके माय गम्पर साधनक साधन बन गय ह। आश्रम वागियामे लिख भी एगा ही हा।

यरवदा मदिर

११-६-३२

२

पिछर सप्ताह मने जिग तारा मडल्ला चित्र लिया था उसक वारेमें अनेक चित्रनायों की गई ह। इम मडल्लक जितने चित्र तयार किय गये ह उनमें से एक भा सपूर्ण नहीं है। चित्रामें जितने तारे बताय गये ह उतम कहा जयान तारे इम मडल्लमें ह। इगलिए मबन अच्छा यह हागा कि हर आत्मा अपना अपना चित्र बनाय और माग आगामे जितने तारे दय उहारा निगान चित्रमें लाय। एगा करनम ताराका पञ्चाननका दकिन एवाम थक जायगी और नक्षत्रामें जो चित्र लिय जान ह उनके बताय गुणका बनाया हुआ चित्र हरगकक लिए उत्तम हागा। क्याकि अलग अलग स्थानों तारा मडल्लका दान पर दयमें घाता एक ता पण्डा हा। हर आत्मा एक निश्चित किय हल स्थानम और निश्चित किये हल गमय पर हा ताराका निर्गणण कर ता टीक हागा। यह गुणाय नक्षत्रा बतानक वारेमें और आकाश दान दुरु बनवायक लिख है। एक बार अनी तरह नक्षत्राका पहचान करने पर कार कटिनाई तहाँ पदनी हम चाहे जहाँ रहे ता भा जाने इन जगमगान मित्रा या लिख गगाकी हम सुगन पहचान गे।

मडल्लक अदबो ददिर हिन्दू या एक साप्ताहिक मगान्त निगान्त है। बम्बई टाग्न या भी लिखता है। उन दानामें

हर महीन दिखाई देनेवाले ऐसे मडगाका एक नक्का छपता है। हिन्दू में हर महीनके पहले सप्ताहमें और टाइम्स में दूसरे सप्ताहमें वह छपता है। कुमार 'मासिकवा सौवा अब प्रकाशित होनवाला है। उसने लिए भाई हीरालाल गहन इस विषय पर लेख भज ह। नभत्राके विषयमें उनका अध्ययन गहरा मातूम होता है। य लेख जिहे पढनकी इच्छा हो वे पत्र लें। म तो उन लेखाके प्रकाशित होनके बाद इस विषयम ज्याना नहीं लिखूगा। म विम तरह आकाश-दशन कर रहा हू इस बारेमें थोडी अधिक स्पष्टता यहा करूंगा। इससे आग जाऊगा ता सप्ताहमें दूसरी बात लिखनी रह जायगी। मौवा आन पर या किसीके पूछन पर कुछ लिखू यह दूसरी बात है।

जिस नक्षत्रका चित्र मन दिया था उसना नाम हमारे देगमें मृग या मृगशीर्ष है। इसी परस महीनका नाम मागशीर्ष — अगहन — पडा है। हमारे महीनोके नाम नभत्राके नामाक आधार पर पड ह। मृग नभत्रका पश्चिममें ओरायन कहत ह। व पारधी माना गया है। उसके पूर्वमें दा सीधी 'वीरामें जो बहुत तेज तारे ह व पारधीके कुत्त ह एमी कल्पना की गई है। पश्चिमम बडा कुत्ता है और उत्तरमें छाटा है। पूर्वकी चार तथा दक्षिणमें पारधीके चौथ कोणके तारेके नीच जा न त्र लिखार् देना है उसको खरगाण माना गया है। कुत्त उमकी ओर दौडत ह। बीचमें जो तीन तारे ह वे पारधीके कमर पट्टेके तान हीर ह।

इम नभत्रकी एसी आकृतिया भी बनाई गई ह बड कुत्तका हमारे यहा व्याघ (गिरारी) कहत ह और बीचक तीन तारे हरिणका पत्र ह। और उमक दक्षिणम जा तारे ह व व्याघक छाड हुए बाणका बतान ह। उत्तरका आर चौकानक बाहर जा तान तार ह व हरिणका मिर ह। यह मारी कल्पना मनारजक हो सकती है। इस कल्पनाक जमक बारेमें बत कुठ लिखा गया है। गरतु उममें म बहुत हा घाडा हिस्सा मन पडा है।

! अहमनावात्म निरानवाण एन गजराना मागिन।

लेकिन आकाशमें एसी आकृति बिन्दु है ही नहीं। ये तारे हमें जितने नज़दीक दिखाई पड़ते हैं उनसे नज़दीक भी वे नहीं हैं। ये तारे अन्तर्में तारे नहीं हैं परन्तु हमारे सूक्ष्म भी ज्यादा बड़ सूक्ष्म हैं। पृथ्वीमें बराबर मोटा दूर होनेके कारण आकाशमें वे छोट छोट बिन्दुआका तरह जगमगाने लगे दते हैं। इन सूक्ष्म तारोंमें हमें बहुत ही कम पान है। लेकिन अन्तर्में अपेक्षा आत्मीयता का भाव ये तारागण मित्रता वाम करत हैं। एक पल का का भी आत्मीयता इन ताराको देने और मनमें गलत कर लता वह तुरन्त अपने तारे के भूल जायगा और ईश्वरकी महिमाके गान गान लगगा। वह समझ जायगा कि ये तारागण ईश्वरके दूत हैं और मारी रात हमारी चौकी करते हैं और हमें दान बघाते हैं। यन्ता सब हुआ। तारे सूक्ष्म हैं और हमसे बहुत दूर हैं — य सब बातें बुद्धि प्रयोग हैं। हमें ईश्वरकी आर के जानमें उनका जा उपयोग है यह हमारे का पुरा सब है। ज्ञानकी दृष्टिमें पानीको हम अनन्त तरल पहचानते हैं लेकिन उम पानका गाय कोई उपयोग नही करत। लेकिन पानी पीनेकी चीज है शरीर साफ रखनेकी चीज है यह पान और पानीका यह उपयोग हमारे का बड़ा कामकी चीज है और उनका सब उपयोग हमारे का सब है। भल ही वास्तवमें पानी कोई दूगला ही पान क्या न हो और उमका इमो भी अधि उपयोग क्या न हो। यकी बात ताराका भी लागू होता है। ताराके अनन्त उपयोग हैं। यन्ता ताराका जा मुख्य गुण मुक्त लगा उनी पर यहा विचार किया है और उनका अनुसार यहा उनका उपयोग बताया है। तथा ही कुछ पुरान समय का अन्तर्मा मान्य होता है। समय पानर अनन्त प्रकारके दूगले पान इममें मिल गये हैं और अनन्त तरहका कहाबिया पान हा गई है। यह सब आकाश-ज्ञानका एक सद्गानके का हम जहर पढ़ें। लेकिन मन नात्रा और ताराका जा मूल उपयोग बताया है उन हम न मूँ।

मूग नात्रक उत्तरमें हमारे दा तारा-मंडल है। उनको पढ़नात भा हम कर लें।

पूर्व

दक्षिण

उत्तर

पश्चिम

इसमें बड़ा मङ्गल सप्तपि मङ्गल है। और छोटा मङ्गल ध्रुवमत्स्य कहलाता है। दोनों मङ्गलके िग्ण सात सात तारे दिय गये हैं किन्तु सप्तपि-मङ्गलमें दूसरे अनक तारे ह। वे टा-म्स और हिडू में बताये गये हैं। ध्रुवमत्स्यमें दूसरे तारे नहीं दिखाई देंगे। इस िग्ण पक्षमें सा गाय तान ही िग्ण देंगे। दो चौकोनक और एक अंतिम तारेका त्रिभुजा नाम ध्रुव है। यह एक ही तारा एसा है जो लगभग अचल रहता है और पृथु ता इसस समकी यात्रामें मल्लाहाको िग्ण पहचाननमें बड़ा मङ्गल मिता थी। य दाना मङ्गल ध्रुव चारा आर िग्ण ही करत मालम हात ह। आजकल उनका गति देखनमें बड़ा आन आता है। सारी रात उनका स्थान बदला करता है। उनकी गतिका बतानवाग नरगा तयार किया जाय ता उनके भागका एक सामा वनु — गा घरा — बन जायगा। इनमें स बड मङ्गलका

पश्चिममें बड़ा रीछ और छोटे मड़का छाटा रीछ बहुत है। एक पुस्तकमें मन इनके मुत्तर चित्र भी दिये हैं। इनके सिवा बड़े राछको बड़ा हत्की उपमा भी दी जाती है। मत्तपि मत्त ता रातमें घड़ीका गज पूरी करना है। घाटा आन्त पड जायक घाट मत्तपिका गतिम समय जरूर जाना जा सकता है।

लेकिन अमूल्य हान पर भी इन मड़कों के उपयोग और य नाम मुझ मूठ उपयोगके सामने बहुत मामूली जम लगत है। वह उपयोग है जमा आकाग स्वच्छ है कम ही हम भा स्वच्छ बनें। जम तार तेजस्वी है वस ही हम भी तेजस्वी बनें। व जिम तरह ईश्वरका मुख स्तवन करत मातूम हात हैं उमी तरह हम भी ईश्वरका स्तवन कर। व जिम तरह एक पत्रके लिए भी अपना माग नहा छाडत उमा तरह हम भा अपना तन्व्य न छोड़ें।

बरवडा मन्दि,

१८-६-३२

६

लेखा-जोखा निकालनेकी जरूरत

गणपति आश्रम (सावरमता) का इतिहास जितने जितने मनमें मनक विचार आत है। हमारी अनक कमियाको धार ध्यान जाना है। इस परम मन्त्र लगा कि हमें समय समय पर अपन कामका लगा जाया निराका चाहिये। व्यापारी अपन व्यापारका लगा जाया राज निराका है हर महीने निराका है हर छः महीनेमें निराका है और बड़ा लगा जाया हर मास निराका है। हमारा व्यापार आध्यात्मिक माना जायगा इसलिए हमें आध्यात्मिक लगा जाया निराका हागा। हर आश्रमका अपना एका लगा-जाया निराका और गमाज मारी गम्पाका निराका। इस प्रकार अगर हम न कर ता जम व्यापारका लगा जाया न निराकाका व्यापारका आध्यात्मिक निराका जाया है वस है हमारा आध्यात्मिक निराका निराका जाय। अपन गरव अस्तिमा

अस्नेय अपरिग्रह वगैरा व्रतो तथा अपने कार्योंमें हम आग बढ़ रहे ह या पाछ हट रहे ह इसे अगर हम न जानें तो हम मशीनकी तरह जड़ बन जायग और अंतमें मशीनसे भी कम काम करग। अर्थात् हम सस्याका नकसान पहुँचायग।

एसा लेखा जोखा कसे निकाला जाय ? इसका जवाब म नीचे कुछ प्रश्न लिखकर दे सकता हूँ

- १ क्या हम असत्यका विचार करते ह असत्य बोलते ह या अमत्यका आचरण करते ह ? हमसे मेरा मतलब हर आश्रमवासीसे है।
- २ अगर एसा हो तो विचार वाणी और कमसे असत्यका आचरण करनेवाले कौन ह ? कहा कहा अमत्य पठा है ? इसका उहान क्या इलाज किया ? आश्रमन क्या किया ?
- ३ आश्रमके इतने बपके जीवनमें सत्यके विषयमें हम आग बढ़ ह या पाछ हट ह ?

इसी तरह सारे व्रतोंके बारेमें विचार करके जहा जहा दोष दिनाई दें कहा कहा उह दूर करनेके उपाय हमें खोजन चाहिय और उनसे लाभ उठाना चाहिय।

आश्रमके कार्योंके बारेमें भी एसा ही करना चाहिय। उनके बारेमें हमें दाहरा विचार करना होगा। पसकी दृष्टिसे इन कार्योंमें जमा और खच क्या एकमा आता है ? हम एसा मानते ह कि सामाजिक कार्योंमें अगर जमा-खचके गाना पलड बराबर आयें तो यह कहा जा सकता है कि व काय धमना लयाऊ रखकर किय गय हाग और अगर उनमें घाटा आय या नफा रह ता कहा जायगा कि जरूर कहा न कहा नानिचा — धमका — भग हुआ है। हमारे कार्योंके सम्बन्धमें दूसरी दृष्टि यह है काम करनेमें मुख्य विचार धमका ही रखा गया है या नही ? आश्रममें यह दृष्टि रखना आवश्यक है क्यकि आश्रमके हमारे सारे काम धम अर्थात् सत्यक अर्थात् हैं।

व्रत और काय दानाके बारेमें नीचेक विचार मनमें उठ बिना नहा रहत

१ आश्रममें ही एक-दूसरेके बीच छोटा छाना चारिया क्या बन्ती है ?

२ ऐसा समय कब और कम आयेगा जब हमें एक-दूसरेका अविश्वास रहेगा हा नहा ?

३ आश्रममें अभी तक बाहरस घार क्या आत है ?

४ हमारा व्यक्तिगत परिग्रह—पना माज-मानान वगराका निजी मग्रह—अधिक क्या है ?

५ हमने आगपासवे गावोंमें अपना मन्व-घ क्या नहा बाधा ? यह मन्व-घ कने बाधा जा सकता है ?

६ आश्रममें अभी तर बीमारी क्या रहती है ?

७ आश्रमके मजदूर भाई-बहनके लिए हमने क्या किया है ? व आश्रमवासी क्या नहीं बने हैं ? अथवा आश्रममें मजदूर हाने ही क्यों चाहिये ? आश्रममें ता मजदूर जीर मालिका काई भे ही नहीं होना चाहिये ।

एग दूगरे नी कई प्रदन म बना मजता हू । एकिन मर विचारका बनानके लिए इनने प्रन बाधा हैं । मैं जानता हू कि छोटे-बडे सब आश्रमवासी इन प्रना पर विचार कर । आपरा रखनका मने जा आस-तिया था उगमें एर यह हेनु ता था ही ।

परवदा मन्िर

२५-४-५२



## राष्ट्रीय सप्ताहका सार

अप्रैल महीनके गदि-सप्ताहके बारेमें भार्गव भगवानजीका पत्र आया है। उसमें कपासके विगाडकी ओर उहान मेरा ध्यान खीचा है। और उन्हें सिका है कि कुछ योगान काते हुए ताराकी सख्या जान बूझकर अधिक लिखवाई है। विगाड उन्हान दो तरहका बताया है

- (१) टूटा हुआ सूत जितना होना चाहिय उससे बहुत ज्यादा है और
- (२) जल्दी जल्दी कातनसे सूतका अक बहुत नीचा रहा है।

अगर किसीन जान-बूझकर ताराकी सख्या झूठी लिखवाई हो तो इसे न भयकर दोष मानता हूँ। इसस आश्रमने नामका बट्टा लयागा। झूठा लिखवानवालेका यज्ञ ईश्वरकी बहीमें तो लिखा ही नहीं जायगा। हमारी बहीमें अमुक तार भल लिखवाय गय हो लेकिन असभमें उनकी काई कीमत ही नहीं है। कीमत तो वास्तवमें जो हो वही सच्ची है। लिखनसे उसमें कोई घटा-बढा नहीं हाती। और काते हुए सूतकी कीमत तो कुछ आन ही होती है। सच्ची कीमत कातनने पीछ रहनवाणे गढ हेतुकी ही है। यह कीमत हम कभी आक ही नहीं सकते। वह ता ईश्वरकी बहीमें ही आकी जा सकती है क्याकि मनष्यके हेतुको कौन समय सकता है? फिर भी हमार पास एक नाप है। अगर अतमें ऐसे यज्ञका साचा हुआ परिणाम न आय ता मानना चाहिय कि हमारे भीतर वही न वही गन्गी है। इस दृष्टिसे सब अपन अपन कामका विचार कर और असत्य बढा गया हो तो नम्रतास उम स्वीकार करव गुढ हा जाय। आश्रममें हम किमी पर छिया चौकी नहीं कर सकत यदातर काम विश्वास पर ही चलता है। हमरे किना तराकस आश्रम चल भी नहा सकता। इमन्गिए आश्रममें सबका अपना धम समझ-बझकर पाटना चाहिय। पूरा तार

१ सावरमनी आश्रमक एक भाई।

निश्चयान्वे दोषके साथ ही हमारे दोषात्ता भी सब लाग विचार कर लें।  
 कानमें निमीने आलस्य क्या था? बेगार टांगी थी? समयकी  
 चारी की थी? टूटा हुआ मूत फेंक लिया था? यज्ञका गत यह है  
 यन करनेवाला मनुष्य उसमें एकरम हा जाय काममें अपनी समूची  
 हाणियारी लगा दे।

काई यह न माने कि मालभर चाहे जसा काम करके राष्ट्रीय  
 सप्ताहमें ऊपरके नियमाका पालन कर लिया जायगा। इतना याद रखना  
 चाहिये कि आधमका सारा जीवना ही यज्ञरूप होना चाहिये। उसमें भी  
 करना करना — मूत वातना महामयन है। राष्ट्रीय सप्ताहमें इतना ही  
 पर हाता है कि उन दिना हम बताईके लिए याना समय लेने ह।

अब आगेके लिए म इनने नियम मुझाता हू

१ बीम अकमे कामका मूत यनमें न माना जाय।

२ अयुक्त नियत की हुई मात्राअ अधिक बिगाड हो ता ऐसा  
 बना हुआ मूत यन न समझा जाय।

३ तय की हुई हल्के नीचे मूतका बस आये ता ऐसा मूत मा  
 यन न माना जाय।

यनकायमें हो या हमारे किमी कायमें मरुया अथवा यजनके बजाय  
 कामकी मपाई और मचाईकी ही बीमत ज्यादा है। पचाय अपाहित्र  
 बीम बजार साबित हाग जब कि एक मजबूत बल अपना काम अच्छी  
 तरह करेगा। पचास भाषरे चाकू मारक नहीं काट सकेंगे लेकिन एक  
 तेज चाकू पूरा काम करेगा। इसलिए जरूरत इस बातकी है कि हम  
 काना ध्यान हर कायकी पूणताकी ओर लगायें। अगल राष्ट्रीय सप्ताहमें  
 हम इसी बात पर ध्यान दें।

म देवता हू कि हुए लागानी काननमें खिच नहीं होगी। हमारा  
 काम व ज्यादा पगल करत ह। हममें एक दोष ता स्वाभाविक है।  
 मनुष्यका जा काम हमेना करना पड़ता है उगने वह ऊब जाता है और  
 भयन मनका यह बहकर पुगता है कि अगर हमारा काई काम करनेको  
 मिलना ता वह ऊबता नहीं। लेकिन अगर कोई हमारा काम उगका  
 हमारा काम हो जाय ता फिर वह तीमरा काम मांगता। हमने सिखा

कातनवालेका ध्यान जान अनजान बताइसे मिलनवाली बहुत थोड़ी मजदूरीकी ओर भी जाता है। आश्रमकी दृष्टिसे यह दोष है। कातनकी मजदूरी कमसे कम इसीलिए आनी जाती है कि आज तो यही एक ऐसा काम है जिसे करोडो लोग कर सकते ह और करके थोडा पसा कमा सकते ह। इस कारणसे बताईको 'यापक बनाने' लिए हम सब यज्ञके रूपमें कातते ह। यज्ञके पीछ कल्पना यह है कि हम कोई काम ईश्वरको अपण करनकी बढिसे करते ह और यह भरोसा रखते ह कि खाना ईश्वर दे ही देगा। यह रहस्य सबको समझ लेना चाहिय और बताईका यज्ञ उसमें एकरस होकर प्रसन्न मनसे करना चाहिय।

यखडा मंदिर

२-५-३२

८

## सफाई, सचाई, पवित्रता और सुघडता

धीरू<sup>१</sup> जो मगन-चरखा लाया था उस पर आज मझ सन्तोष हो इतना काबू मन पा लिया है। इसलिए मय इस चरखेके वारेमें दूसरी बातें करनकी इच्छा हा आई ह। वल्लभभाईकी तेज आत्मान तो उस पर चढा हुआ मकडीका एक जाला दख लिया और तुरन्त उन्हान इसका मजाक भी किया। मणिवहनकी भारी सुघडताकी जड क्या है इसका मझ यही आकर पता चला। जिन लिफाफामें आश्रमकी डाक बन्द करता हू वे सरदारकी सुघडताके नमून होते ह। जिन लोगान व लिफाफ देव न हा व उह देखें। उनमें सफाईके साथ भारी लिफायतगारी भा होती है। यहाकी डाकके लिए बहुत लम्बे लिफाफाकी जरूरत नहा हाती। इसलिए एक लम्ब

१ आश्रमका एक विद्यार्थी।

२ सरदार वल्लभभाई पटेलकी पुत्री। -

लिफाफे दो बना लिये जाते हैं यह ध्यान बन जाती बात है। पुष्टियों बगरा में जा बादामी कागज आता है उस ममा कर रग लिया जाता है और उससे लिफाफा नई तहें तमार का जाता है।

यह ता मरी प्रस्तावना हुई। वमभाईने मकड़ीव जाकी जा दीना की उस पर मन ध्यान तो दिया किन म इम मगन-वगडा चानक लिए बहुत अधीर बन गया था। चरखेका चक्र चानेके लिए भी बाया हाथ काममें न लेनेकी बात डाककर बहुत ही रहत प। इमलिए मन सोचा कि चक्र पावने चगाऊ ता चरखेका थाम एक दिनके लिए भी सापद बन्द नहीं रहेगा। और चरखे पर जाकी बावू पानेके जोगमें मन जाकेकी थरका थमा ही पना रहने दिया। आज दाहिना हाथ काम करेगा ऐसी हिम्मत था जानेस चरखेके दापों पर मेरी नजर गई। एक्के बल सात-आठ म्यानों पर मने जाऊ लग हुए दने। घूल ता सब जगह खड़ी ही था। पीतक मोडिये पर तैज और धूनका मल्टम जमा हुआ था। बह और टार पटिया पर काफी मल जम गया था। यह क्षमा करने गपन नहीं माना जा सकता। चरखा दरिद्र-नारायणका चक्र है। चरखा उगकी पूजाकी मुख्य सामग्री है। उग पर मल चढ़ाकर हम दरिद्र नारायणका अपमान करने ह। सामान्य तौर पर मदिरा भगजिनों गिरजापरा थगरा स्थानामें स्वच्छता रगी जाती है। हम ता यह मानने ह कि हरणक म्यान ईश्वरका मन्दिर है। एक भी बाना ऐसा नहीं है जहा ईश्वर न हो। इमलिए हमारी दुष्टिमें तो सोनेका कमरा रमा पर पुस्तालय पागाना—गभी मन्दिर ह और मन्दिरका तरह ही गार-भूच रहने चाहिये। सब फिर चरखेके बारेमें तो क्या ही क्या जाय? अगर चरखाकी रगिमें गचमुच हमारा विश्वास ह। ता बालगिने एार बुझा तक कोई उस गार रग बिना नहीं रहेंगे।

हमारे यहाँकी बिनीकी गराईक बारेमें ता म लिा हा क्या ह। आजकल हम उग अधिच ध्यान देण रहे ह। बिनीने देण महीने पर दो बचाका जम दिया था। उनका रहन-सहन अनोखा लाना है। तीना थाम ही कभी अग लिाई पदन है। अब बच्चे

दूध पीता चाहते हैं तब माँ उन्हें दूध पित्राती है। दोनों बच्चे साथ-साथ चिपट कर ही दूध पीते हैं। वह दस्य बड़ा मुल्कर मालूम होता है। माँका इसमें कोई गरम नहीं लगती। विल्ली अपन सब काम खलेमें या हर जगह नहीं करती। बच्च चलन और खलन लग कि तुरत विल्लीन उन्हें शौचके नियम सिखाय। उसन एकातमें नरम जमीन दखकर खड़ा किया। उस पर बच्चाको बठाया। बादमें धूँसे मलको अच्छी तरह ढककर जमीनका पहरे जसा बना दिया। अब दोनों बच्च रोज इसी तरह शौच करते हैं। वे भाँ-बटन हैं। चार दिन पहले उसन स एक बच्चा जमीन खादन लगा। लेकिन जमान कड़ी थी। दूसरा उसकी मददमें पहुँच गया और दोनोंन मिलकर अपन लायक सजा खोज लिया। शौचकी त्रिया पूरी हो जानके बाद जमीनको अच्छी तरह ढक कर लेना खाना हो गय। ऐसे प्राणी — छोटे और बड़े दोनों — जो काम कर सकते हैं उभे हम आसानीसे क्या नहीं कर सकते ?

लेखक नाममें चार गल्पाका उपयोग मन एक ही भावको बतानके लिए किया है। हमें आत्माका भान है इसलिए हमारी सफाई भीतरी और बाहरी दोनों प्रकारकी होनी चाहिय। लेकिन भीतरी सफाईका मतलब है सचाई। सचाई ही सबसे बड़ी पवित्रता है सचाईका ही मतलब मुषडता है। हम बाहरसे स्वच्छ और मुषड हैं और अन्तर हमारा मल हो ता हमारी बाहरी मुषडता या तो निरा दिखावा है या ढाग है या विषय भागकी निगानी है। एसलिए मयमी स्त्री-पुरुषाकी मुषडता अन्तरकी पवित्रताकी निगानी है। ता ही उसकी कीमत है।

हमारा महा मन्दिर हमारा गरीर है। उसमें बाहरकी कोई गल्पी हम न भर। अरन मनको हम दूरे विचारसे मल न कर। इस स्वच्छताको साधनवाला मनप्य अपन हर काममें मुषडता बतायगा।

मरवडा मन्त्रि

## अनोखा त्याग

कमी कमा मामूली पाठ्यपुस्तकामें न भा हमें मन पर गहरा अमर करनेवाग वाप मिल जाता है। आजकल म उदूका पाठ्य पुस्तकें पढ़ रहा हू। उनमें कोई कोई पाठ बड़ गुल्नर आ जान ह। एम एक पाठका मुझ पर तो बहुत गहरा अमर पडा है। समब है हमरे गंगा पर भी उमका ऐमा ही अमर पड। इमलिए नाचे म उमका मार दना ह।

पगम्बर मुहम्मद साहने अवमानक कुछ ही बरम बा अरवा और रामनाचे बीच भयकर लडाई छिड गई। उममें दाना अरक यादा बडा सख्यामें मारे गये। बहुतम घायल भी हुए। गाम हाने पर आम तीर पर लडाई भी ब हो जानी थी। एक दिन जब हम तरह लडाई बन्द हुई तब अरवाकी मनाका एक अरब यादा अपन बाबाके लडकेको राजने निकला। वह ऐमा विचार करक निकला या कि अगर बाबाके लडकेका लाग मिलेगी ता उमे अपना दूगा और अगर वह जिला मिग्या ता उमकी मार-ममाल बग्गा।

वही वह पानीके लिए न तडप रहा हो एमा मोचकर इग यादाने अत माय पानीका एक स्रोत भी भरकर रग लिया था। बन्दे मार तडपने हुए पापल गनिकारे बीच वह लखन एका अपने भाईका गोजमें पूमन लगा। एक जगह उमका भाई पडा मिला। वह मचमुष ही पानीके लिए तडप रहा था। उमक पावामे मूल बह रहा था। उमक जीनकी बहुत बम आगा थी। अरब यादान उमके पाप पानीका लाग रगा। इनमें दिमा घायलकी पानी पानी की आवाज सुनाई पडी। इमलिए इग दवाले मिपाहीन अत भाईग बहा भाई एका तू उम पानी मिग आ। फिर मुझ लिखता। तिम लिगात पाती की पुकार आ रहा थी उनी दिगामे तेर काम उगाकर वह भाई पडुवा।

यह घायल योद्धा एक बड़ा सेनापति था। सनिक सेनापतिको पानी देता है और सेनापति हाथ बटाकर पानी लेनका प्रयत्न करता है इतनमें तीसरी दिशासे पानीकी पुकार सुनाई पडी। यह सेनापति भी पहले घायल योद्धाकी तरह ही परोपकारी और दयालु था। इसलिए उसन मस्किन्से कुछ बोलकर और कुछ इशारेस पानी लानवाठे योद्धाका समझाया कि पहले जहासे पुकार आई है वहा जाकर घायलको पानी पिना आजो। बचारा सनिक दुसकी आह भरता भरता हवाकी गतिसे वहा पहुचा जहासे पानीकी कृण पुकार आ रही थी। वह पहुचा ही था कि पानी पानी चिल्ला रहे घायल सनिकन आखिरी सास की और सलके लिए जालें बंद कर ली। वह पानी पी नहीं सका। अब पानीवाग योद्धा दौडकर वहा पहुचा जहा सेनापति पडा कराह रहा था। पास जाकर देखा तो उसकी भी जालें बंद हो चुकी थी। दुखी मनसे खदाकी बदगी करता करता वह अपन भाईके पास गया। देखा तो उसकी नाडी भी बंद हो गई थी। उसके प्राण-मस्करू उड गय थ।

इस तरह तीनामें से एक भी पानी पीकर अपनी प्यास नहीं बसा सका। लेकिन पहले दो योद्धा अपना नाम अमर करके इस दुनियासे चल गय। इतिहासके पष्ठोंमें ऐसे निमल शद्ध त्यागके अनक उदाहरण दलनमें आत ह। उनके वणन मजी हुई कन्मस स्थि गय हा ता हमारी आवासे दा वूद आसू भी टपक पढते ह। लेकिन ऊपरका अनोखा उदाहरण दनका मतलब ता यह है कि उन वीर पुरुषाके जसा त्याग हममें पदा हा और हमारी परीक्षाका समय आय तब हम भी दूसराका पानी पिनाकर खन पिये दूसराको जिलाकर खुन जिये और दूसराका जिगनक प्रयत्नमें अगर हमारे मरनका अवसर आय ता हम हमत हसन मृत्युकी गादमें सा जाय।

मम उगना है कि पानीकी परीभास अधिक कनी परीभा सिफ हवाका है। हवाके बिना ता आत्मा पलभर भा नहीं जी मवता। इसलिए सारा जगत हवास छाया हुआ मानूम होता है। लेकिन कनी एसा समय भी आता है जब पनीकी तरह एक छोटीसी कान्तीमें

बहुतसे आत्मी बंद ही एक ही छदमें स घाड़ी हवा काठरीमें आती हा वह हवा जिन मिले वही जी सक्ता हो और दूमर दम घुट जानक कारा मर जायें। हम ईश्वरस ऐसी गक्ति दनकी प्राथना करें कि जय एसा समय आय तब हम खुद हवा न लवर दूमराको हवा लेन ॐ।

हवासे दूमरे नवर पर पानी है। पानीवे एक प्यालेक लिए लोगाको आपसमें लडन सुना गया है। हम यह कामता कर कि एस समय पाठवे उन बहादुर अरर योद्धाआका त्याग हममें पया हा। एकिन एसी अग्नि-परीक्षा — बडी बसौटी — तो किमी बिरडवा ही हाती है। मामूली परीक्षा ता हम सबकी राज ही होती है। हम मय अपन आपसे यह पूछनकी आदत ठाणे जब बभा समय आता है तब हम राज अपन मापिया और पडोमियाका आगे करके खुद पाछ रहने ह ?' न रहने हो तो बहा जायगा कि हम परीक्षामें नायाम हुए ह हमने अहिमाना पहना पाठ भी नही मारा है।

बरबडा मन्दिर,

१५-५-३२

१०

## बिल्ली शिक्षिका

यहांकी बिन्नीनी गुपडतावे बारेमें तो म गिय ही चुका हूं। उग थीर उमवे बच्चाका देसकर तेगा गता है कि बिल्ली एक आत्मी शिक्षिका है। बच्चोंको जो जा बातें सिगानी चाहिय वे सब यह भासा बिना किमी पापनाक और बिना कुछ बोल उहें सिगानी रहती है। सिगानका उसका तरीका बिन्नु आमान है। बिल्नी जा कुछ बच्चाको सिगाना चाहती है वह सब बच्चारे दगन हुए राय करने बता दती है। बच्चन सुरत यह काम करन ग जाने ह। इसी तरह ब दौडना पेड पर चढ़ना ममन कर उनलना माना सिगान करना और अगन घरीरका पाठ कर माफ रगना मीम ह। देनन ही देगने मां जिनना जानती है यह सब बच्चे नी जान गय है।



## आश्रम-जीवन

मा अपन बच्चाको ज्यादा समय तक अकेला नही छोडती। उमका प्रेम मनप्यक प्रेम जसा ही लगता है। वह बच्चाको बगलम लकर सोती है। वे दूध पीना चाहते ह तब खर लट जाती है और बच्चाको दूध पीन देती है। उसन कोई गिकार किया हा तो उस बच्चाके पास ले आती है। बल्लभभाई राज उहे दूध पिलाते ह। छोटीसी रकाबीमें स तीना मा बट दूध पीत ह। बहुत बार मा देखा करता है खुद दूधमें हिस्सा नही बटाती। वह बच्चाके साथ बच्चोकी तरह खलती-कूदती है और कुशती लडती है।

इसमें से मन यह सार निकाला है कि अगर हम बालकोको गिशा देना चाहें तो जो बात हम उनसे कराना चाहते हो वह हम खद करने उहें बतायें। बालकामें अनकरण करनको बहुत बडी गक्ति होती है। मुरस कही हुई बातको वे कम समयेंग। अगर हम बालकाको सत्यकी गिशा देना चाहें तो हमें सदाका बडी बारीकीसे सत्यका पात्रन करना चाहिय। उहे अपरिग्रहका पाठ — धन-दौगत तथा दूसरी चीजाका सग्रह न करनका पाठ — सिखाना हो तो हमें इन सबका सग्रह छाड देना होगा। जो बात नतिक नियमोके बारेमें सच है वही गरीर श्रमके कामोके बारेमें भी सच है।

इस दृष्टिसे विचार करन पर हम तुरन्त समझ जायग कि आज जिस तरहसे बालकाको गिशा दी जाती है उसका परिणाम धन और समयक सचकी तुलनामें बहुत कम आता है। इसक सिवा हम यह बात भी समझ सकते ह कि बडा उमरके सब लाग गिभकके स्थान पर ह। व इस स्थानकी प्रतिष्ठाकी रणा नहा करत इसीसे हमारी गिज्ञान हानिकारक रूप ल लिया है।

बिल्लीको और दूमरे पशुआको बडि नहा होती या मनुष्यके जमा बडि नही होता। बिल्ली जो कुछ करती है उसके बनिस्वत हमें बहुत आग जाना चाहिय। लकिन एमा करना समभव हा इसके पहले भावी सन्तानकी नीति — सदाचार — व रक्षाके नाते हमें स्वय नीतिका पालन करना चाहिय। हम भावी प्रजाका जो कुछ सिखाना चाहते ह उस भरयक हमें खु सीख लना चाहिय।

आश्रमक गणिक और गिनिकायें तथा दूसरे आश्रमवासी इस दृष्टिम विचार करने लगे और जरूरी हा वहा इसका अपन भी करने लगे इसा हेतुसे मने यन लिया है।

यरवडा मदिर

२२-५-३२

११

### मृत्युसे मिलनेवाला सबक

जहा तर मुझे या है आश्रममें आज तब नीचक आश्रम वासिपाकी मृत्यु हुई है फकीरी ब्रजगल मगनगल गीता मयजी समत, इसाम साहब तथा गगानेवी। (इन सबकी मृत्युकी तारीखें गिन रखना अच्छा हागा।)

फकीरीका मृत्यु आश्रमकी गामा बडानवागी नहा मानी जा मकती। आश्रम तब नया ही था। आश्रमके मस्तार फकीरी पर नही पह था। फिर भी फकीरी बहादुर बाग था। यानमें अति करनेके कारण वह मौतना गितार बसा इगालि मन उमकी टाका की है। उमका मृत्यु मरा कडी परीक्षा जमी थी। मुझ माद जाना है कि आगिरा गिन म ही रातभर उमक पाग बडा था। और मुब मुझ गुरुगु जानक गिन गाडी पकानी थी। अन्पीका म्मान तब पन्वानके बा परपरका कडका सनार मन म्गनता राग्या पकडा था। फकीराक गिनान यह मानार मुझ पकारारा और उमके तीन भाइयारा गीता था कि में पकारी और आश्रमक दुगरे बरबरे बाब बाई फ नग बग्गा। फकीरा गया इमलि उमक तान भाइयारा भा म था था।

ब्रजगल बडा उमरमें बेव गंवाकी भावनाम आश्रममें आय था। तवा करत करत ही मृत्युम भे करत था अमर बन और आश्रमकी गामाका बडा म्ग। एष बालक पडेका कुणमें ग गिनालक गिन था नीचे उमरे था। तकिन रग्गाके गगारे बडन समय पर जानक

कारण वे रस्सी परसे फिसल गय और गहरी चोट लगनके कारण उनके प्राण चूठे गय।

गीता गीताका पाठ सुनती हुई गातिसे चली गई। मेघजी ऊधमी लडका कहा जायगा लेकिन बीमारीमें उसन अनोखी शाति रखी। बालक अक्सर बीमारीमें बहुत परेगान होते ह और अपन पास रहनवागको भी परेगान करते ह। मेघजीको लगभग आन्ध रागी कहा जा सकता है। वसन्तन किसीकी सेवा ली ही नहीं — जानलवा चचनन एक या दो दिनमें ही उसकी जान ले ली। वसतकी मृत्यु पडितजी (खरे) और लदमीबहन (खरे) के लिए भारी कसौटी सिद्ध हुई। लेकिन दोना उसमें स पार हो गय।

मगनलाल (गाधी) के विषयमें तो क्या कहा जाय ? सच पूछा जाय ता यहा गिनती एसी मृत्युआकी लगायी जा रही है जो आश्रममें हुई थी। इसलिये मगनलालक नामका यहा स्थान नहीं मिलना चाहिय। लेकिन उनके नामका बसे छाडा जाय ? उन्हान तो आश्रमके लिए ही जम लिया था। सोना जस आगमें तपता है वसे ही मगनलाल सेवाकी आगमें तपे और सौ टच गढ सोना सावित हाकर घट वस। आश्रममें आज जो भी कुछ है वह सब मगनलालकी सवारा प्रमाण पेश करता है।

इमाम साहबका एक ही मसलमान परिवार अनय भक्तिसे आश्रममें बसा है। उनकी मृत्युन हमारे और मसलमानाके बीच कमी न टनवाली स्नहगाठ बाध ली है। इमाम साहब अपनको इस्लामके नमा इदा मानने थ और उसी रूपमें आश्रममें आय थ। (यहा अमीनाके दो बच याग आत ह। व बहुत छट थ इसलिये उनके बारेमें कुछ कहन जमा नहीं है। लेकिन उनकी मृत्यु हमें सयमकी आवस्यकताका सबक जरूर निखाती है।)

गगानेवीका चट्टा आज भी मेरा आपादे सामन तर रहा है। उनकी आवाजकी भनक भरे कानामें पड रही है। उनके स्मरणको याद करक आज भी मैं धरना नहीं। उनके जीवनम हम सबका और स्नान करक बहनाका कई सबक साखन ह। वे लगभग अपड थीं फिर

भी गानी थीं। हवा बदलनेके लिए जा गती या फिर भी वे अवेनी ही एसी बहन थीं जा हमें जानेंस इनकार करती या। जा बाप उनके हाथमें आये उनका गंगाजीने अपन बच्चाकी तरह पालन पोषण किया। म नहीं जानता कि उन्होंने किसी दिन किसीसे झगडा किया हा, या किसी पर कभी गुम्मा किया हा। उह न ता जीनेकी सुगि या न मरनेका डर था—उन्हान हमने हसन मृत्युस भेंट की थी। उन्होंने मरनेकी क्या सीख ली था। जिस तरह जीनेकी क्या है उमी तरह मरनेकी भी क्या है।

इन मत्र मृत्युआशा स्मरण में हम सबकी जागृतिके लिए किया है। इस विश्व मड्डमें हमारी पृथ्वी एक कणके समान है। और उस कण पर हम दहकूपमें एक तुच्छ कणक समान ह। हम किसी विश्वमें रहनेवाली चीटियाका गिननेमें अगमय हैं। धानीके छोटे जनुआका हम अपनी आगमि दग भी नहीं सवने। विराट पुणक सामन नो हम आगमि देने न जा मननवाले जनुआमि भी छोट हैं। इमलिए मनुष्यक शरीरका जो क्षणमगुर—एक भरमें नाग पानेवाग—कहा गया है वह मोल्हा आने गव है। उगता मोह किमलिए रगा जाय ? उगने यातिर हम एक भी जीवका श्रुत क्या पनुषायें ? काचग भी कमजोर—ज्याग जन्नी टूनवाल—इग शरीरका टिरानेके लिए इतनी दौडपुय और पापगी हम क्या मचायें ? मोतका मतद्व है एग शरीरमें ग जीवका उड जाना। इग मोतका डर किमलिए रगा जाय ? उगने गमवका टालनके लिए इतन बड झमडमें क्या पडा जाय ? इन गव बाग पर बार बार विचार करके छो-बड गव गग आन मनग मोतका डर निरा डारें और शरीर जिग रहे गव तग उगने रजार मेराक काममें उम पिग डारें। एमी तजारी कानकी गलि हममें पग हा शीतिग हम रोज गीताने दूगर अध्यायक अगिम १० गवाग रगन करते हैं। उनका रगन अगर हमारे हृदयमें पग ता हम गग गगने कि जा कुछ हमें यातिर कत गव इन रगकामें नरा हुआ है।

पुनः—यह जिग बुझनेक बाग महार पातिमा ककी और कानकी माताकायी याग जिगने हैं। लेकिन मूग जा गार निगागना

या उसमें इमसे कोई फक नहीं पडता। इसलिए म लेखको इसी रूपम रहन देता हू। वसे इन तीनोंकी मृत्यके विषयमें मन जो कुछ सुना है वह सब पवित्र स्मरण ही है।\*

यरवडा मंदिर

३०-५-३२

१२

## तितिक्षा और यज्ञ

कोरके रोगसे पीडित एक भाई अपन पत्रम नीचेके विचार प्रकट करते ह

मेरा यह विश्वास दिनादिन बढ़ता जाता है कि मेरे जस रोगियाके लिए आसन प्राणायाम वगरा सामान्य क्रियायें और यन करनके बान प्राप्त किया हुआ अन्न इस रोगके लिए उत्तम चीज है। मेरा समय गीता उपनिषद् वगरा पत्रम भजन गानमें ईश्वरके ध्यानमें और कमसे कम ५० गज सूत बाननमें वातना है। हमारा धम तितिक्षाका गुण सिवाता है। जीर तितिक्षाका अय... न दुलाको मनमें वि तया चिन्ता।

विना महन

हू और ब्याव

भा तरहका

। मरे जने

इमलिए

साफ करना

कर खुल

तथा

महन गविन बगाना ह । लेतिन बहुत वार मह विचार मनमें उठना है कि जब मरा गराग वाइ भा यतवाय करने गयन न रह जायगा तब क्या हागा ? गास्त्र ता पुनार पुनार वर बहुत ह आपन भा यत वार कहा और गिना है तथा मन जनभव भा किया है कि यतहान जावन मृत्युक् समान ३ पृष्ठा पर भारण्य है और ममारका कष्टमें डालनवाग है । अउ मवाग यह पना हाता है कि मनष्य इतना ज्याग रागम पिर जाय कि उमम किमी प्रकारका यन हा ही न सब और अपन गरीरका तिकाये रगनव गिए उम हर क्षण दूमगको हा मरा एनी पह ता एग ममयम उम करा करना चाहिये ? किगा धमगास्त्रमें मने यह भा पना है कि जब मनुष्यका एगा राग हा जाय जिगवा गगज हा न हा गव तउ उस ना तागत्र बगरामें डूवर या जय गिना उपायस प्राण छाड न चाहिय ।

यहा मन एग गुस्त्र पत्रवा आनी भाषामें गार गिया है । इम पत्रम म हम मयव गिए ना इतना हा अय निरागना चाहता ह कि एन नाईन जिग महन गविन वारमें गिना है यगा महन गविन हम सब अपन भातर बगवें और रागन हान हए भा गगर बाग उग गव तउ तर या एगन हा रने । गहन गविन बगाना और यत पटना --ये गना वानें बहुत पुगना है । आधममें ता कम्म कम्म पर य वान हम गुनत ह । गविन अउ गिगा अनुभव मनुष्यका कम्मगे एगा बात हम तर पचया है तर बर नद जता मागूम हाता है । और उानें बहुत बरी गविन भरा हाता है । बाइरा कष्ट भागनवाल मनष्यगे हम एगा गगारी और एग अनुभवता आता गी गय गवत । अउगर एग मनष्य जब कुछ गिगत ह तब प्राणा पुग हा रात गियाई न ह । एगिन एग पत्रम हम बाई अग हा बात अनुभव करत ह । गीगिग इम पत्रवा गार आत्मसहिदाई गिग मन यग गिग हाग है । पत्रमें जो मरा उगाई एग है एग पर भी हयें विचार करना चाहिय ।

या उसमें इससे कोई फल नहीं पड़ता। इसलिए मैं लेखको इसी रूपमें रहल देता हूँ। वैसे इन तीनोंकी मृत्युके विषयमें मन जो कुछ सुना है वह सब पवित्र स्मरण ही है।\*

यखडा मन्दिर

३ -५-३२

१२

## तितिक्षा और यज्ञ

काढके रोगसे पीडित एक भार्द अपन पत्रमें नीचेके विचार प्रकट करते ह

मेरा यह विश्वास दिनादिन बढ़ता जाता है कि मरे जैसे रोगियोंके लिए आसना प्राणायाम वगरा सामान्य विषयों और यज्ञ करनेके बान प्राप्त किया हुआ अन्न इस रागके लिए उत्तम बोज है। मेरा समय गीता उपनिषद् वगरा पत्रमें भजन गानमें ईश्वरके ध्यानमें और कमसे कम ५० गज सूत काननमें बीतता है। हमारा घम तितिक्षाका गुण सिताता है। और तितिक्षाका अर्थ है ममस्त दुःखाको मनमें विराध निय बिना तथा चिन्ता और रुदन किय बिना सन्न करना। यह मन्न शक्ति में अपन भीतर बडा रहा हूँ और बढ़ाने बगाने इस बातका अनभव कर रहा हूँ कि किसी भी तरहका यज्ञकाय किय बिना यह तितिक्षा पत्र नहीं हाती। मरे जन आदमीय कोई महान यज्ञकाय ता नहा हो सकने। इसलिए आगके उपयोगमें आनवाके रास्ते साफ करना मला साफ करना और चरणा चलाना—य पत्र ईश्वरका कृपाके मरे लिए सले ह और इतना यज्ञकार्योधि में आनन्द प्राप्त कर उता हूँ तथा अन्न भातर

\* इस प्रकारमें आप हुए सब नाम आश्रमवासियोंके ह ।

## तितिक्षा और यज्ञ

सहन गतिन बनाता हूँ। लेकिन बहुत धार यह विचार मनमें उठता है कि जब भरा गरीर काई भी यज्ञाय परत लया न रह जायगा तब क्या होगा? शास्त्र ता पुत्रा पुत्रा पर बहन ह आपन भी बहुत धार पढ़ा और शिष्या है तथा मा अनभव भी किया है कि यज्ञही जीवा मृत्युके गमा है पृथ्वी पर भारतप है और गसाखा पृथ्वी डालयाग है। अब मवाल यह पदा हाता है कि मनुष्य गता पात रागग फिर जाय कि उमस किगी प्रवारवा यम हा ही न गवे और जगन गरीरका टिकाय रणाके शिष्य उग हर क्षण दूगराती ही गवा गनी पड ता ऐगे गमयमें उगे क्या परता चाहिये? किगी घमगास्त्रमें मने यह भी पढ़ा है कि जब मनुष्यको एमा राग हो जाय जितना इयाज ही न हा गवे तब उग गनी तालाव वगरामें डूबर या अय किगी उपायम प्राण छाड न चाहिये।

यहा मने एग मुत्र परता अपनी भायामें गार दिया है। इस परम म हम मने लिए ता इतना ही अय निताला चाहता ह कि इन भाईन जिम गहन गतिने धारमें शिष्या है यगी गहा गतिन हम मव अपने भातर बढ़ायें और रागव हात हुए भी गरीर बाग उग मव तब तब या परत हा गे। गहा गतिन बढ़ाता और यज्ञ परता —य गना बाने यदून पुरानी ह। आथममें ता वरम वरम पर यह बात हम गुनन ह। कि जब किगी अनुभवी मनष्यकी वरमम गमा बात हम तब गदुनी है तब यह नई जमी मादूम हाता है। और उममें यदून घनी गतिन भरी हाता है। बाइता वर भागनवा मनुष्यकी हम गमा गाराकी और ऐगे अनुभवकी आता नहीं गग मवत। आथम गम मनष्य जब बुल शिष्या है तब अपना दु ग हा रात शिष्याई नै ह। लेकिन इस परम हम काई अलग हा बात अनुभव परता ह। गनीशिल इस परता गार आथमवाशियाई शिष्य मने यनी शिष्य हाग है। परमों को ताता उगाई नई है उग पर भी हमें बिबाग करना चाहिये।



हमारी भावनाक अनुसार यनका अर्थ है परोपकारके लिए हृदयमे किया जानवाग कोई भी शारीरिक काम। लेकिन इससे यह नहीं मान लेना चाहिये कि जा आदमी शरीरसे कमजोर है वह पगहीन है — वह यन नहीं करता। जा आदमी शरीरसे बिल्कुल कमजोर हानके कारण कोई शारीरिक काम न कर सके वह अपनी मानसिक शक्तिमे अनक तरहकी सेवा कर सकना है। और एसा सेवा अवश्य हा पज्ञ माना जानी चाहिये। लेकिन एसी स्थितिकी कल्पना की जा सकती है कि जब इस प्रकारका कोई यन करन जितनी शुद्धि आदमीमे न हो एसा मनाव न हो और फिर भी यनकम करनका उमकी तीव्र इच्छा हो अपन शरीरक बारेमे वह उन्मासीन बन गया हा दूसरासे सेवा करानमें उस दुःख होता हा और राग प्राणघातक है इस बातका उस विश्वास हो गया हो। एसी स्थितिमें मज लगता है कि जिसमें प्राणत्याग करनकी शक्ति हा उसे ममा करनका पूरा अधिकार है शायद यह भी कहा जा सकता है कि एसा करना उसका धम — कर्तव्य — है। लेकिन धम है एसा करना सुननवाग आत्मीकी आघात पहचानवाग माना जा सकता है। प्राणत्याग करना दूसराका धम है यह कवन जानवाक मुहम शामा नहीं देता। और एसा बान सुनन वाग रोगी शायद धवरा भी जाय। लेकिन एसा अनर्थ हाना यहा मभव नहीं है यह मानकर मुच ना कुछ ठाक रणा वह अनना मर्यादामें रहकर मन शिव डाला है। अनक उपाय करन और बहद सेवा लनक वाग ना जानकी तपणा — इच्छा — कम हो और मृयुका भय मिश्र यं हर तरफसे चाहन शाय्य हो है। इमा दृष्टिको सामन रखकर मने लिखा है कि समशरीर आदमी अमाध्य रोग हा जान पर प्राण त्यागकी यति अनना धम मान ता वह गलन काम ही करता है एसा माननका कार्ण नहीं है।

धरवडा मन्त्र

६-६-२२

## प्रायना

प्रायना आश्रमका एक मूलभूत अंग है। इसलिए इसके महत्त्वका हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। प्रायना अगर मन लगाकर न की जाय तो सब बिया-बराबा बकार है। भोजन करते समय अरगर कोई आत्मी साता नहा देता जाता। प्रायना भाजनम कराडा गुनी अधिक लाभदायक है। प्रायनाके समय काइ साथ यह तो भारी दुःखी बात माना जायगी। प्रायना छूटन पर मनुष्यका बहुत दुःख हाना चाहिये। भाजन चाहे छूट जाय लेकिन प्रायना नहीं छूटनी चाहिये। भाजन छाडना कभी कभी गरीबके लिए लाभदायक साबित होता है। लेकिन प्रायनाके छूटनसे तो कभी लाभ हा ही नहीं सरता।

एकिन जो आदमी प्रायनामें साता है आलस्य करता है याने करता है सावधान नहीं रहना विचारना अतक स्थाना पर भटकने देता है उगन प्रायना छाडी एसा ही कहा जायगा। प्रायनामें बेवकफारसे हाजिर रहना बाग माना जायगा। जो आत्मी बरत गराएल प्रायनामें हाजिर रहता है वह दाहरा दाप करता है वह प्रायनाका छाडता है, और ममाजका धारता देता है। धारा दनेता मतलब है अगतरसा आचरण करना मत्वक प्रनवा भग करना।

एकिन न चाहन पर भा नील आवे या आरुस्य आवे तब क्या बिना जाय? वास्तवमें एसी बार्द बात है ही नहीं। अगर बिगतरन उतर मीध हम प्रायनामें बर जाय तब तो नीद ही आवणा। एकिन प्रायनामें जानम पह हमें जापन हा जाता चाहिये दानुन करना चाहिये और ताज थ पुर्नी रहनेरा निषय करना चाहिये। प्रायनामें एर-भूगले गटर नहीं बंता चाहिये मीध तनकर बटना चाहिये धीरे धीरे गांन एनी चाहिये और उच्चारण अच्छी तरह करन आवे ता ऊपी आवाजम नही ता मनमें जो एगेक वा भजन

हमारी भावनाके अनुसार यन्त्रका अर्थ है परोपकारके लिए हृदयसे किया जानवाला कोई भी गारीरक काम। लेकिन इससे यह नहीं मान लेना चाहिये कि जो आदमी गरीरक कामजोर है वह यज्ञहीन है— वह यज्ञ नहीं करता। जो आदमी गरीरक विकुल कामजोर हानक कारण कोई गारीरक काम न कर सके वह अपनी मानसिक शक्तसे अनेक तरहकी सेवा कर सकता है। और ऐसी सेवा अवश्य ही अन्न मानी जानी चाहिये। लेकिन ऐसी स्थितिकी कल्पना की जा सकती है कि जब इस प्रकारका कोई यज्ञ करने जितनी शक्ति आत्मीय न हो। ऐसा मनोबल न हो और फिर भी यज्ञकम करनेकी उसकी तीव्र इच्छा हो अपन गरीरक बारेमें वह उदासीन बन गया हो दूसरोंसे सवा करानेमें उसे दुःख होता हो और राग प्राणघातक है इस बातका उसे विश्वास हो गया हो। ऐसी स्थितिमें मज्ञ योग्यता है कि जिसमें प्राणत्याग करनेकी शक्ति हो उसे ऐसा करनेका पूरा अधिकार है यद्यपि यह भी कहा जा सकता है कि ऐसा करना उसका धर्म— कर्तव्य— है। लेकिन धर्म है ऐसा कहना सुननेवाले आदमीको आघात पहुँचानेवाला माना जा सकता है। प्राणत्याग करना दूसरोंका धर्म है यह वचन जानवालेके महम गाभा नहीं देता। और ऐसी बात सुननेवाला रोगी गायद घबरा भी जाय। लेकिन ऐसा अनर्थ होता यद्यपि सम्भव नहीं है यह मानकर मज्ञ जो कुछ ठीक योग्यता वह अपनी मर्यादामें रहकर मन स्थिर ठाने है। अनेक उपाय करने और वह सब सवा अनेक बात भी जीनेकी तत्पणा— इच्छा— कम हो और मृत्युका भय मित्र यह हर तरहसे चाहने योग्य ही है। इसी दृष्टिको सामने रखकर मन स्थिर है कि समझदार आदमी असाध्य रोग हो जाने पर प्राण त्यागनेकी यत्ति करना धर्म मानता वह गन्तव्य काम ही करता है।

परवटा मंदिर

## प्रायना

प्रायना आश्रमका एक मूलभूत अंग है। इसलिए इनसे महत्त्वका हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। प्रायना अगर मन त्यागकर न की जाय तो सब बिया-बराया बेकार है। भाजन परत समय असमर काई आत्मा माता नहीं देवा जाता। प्रायना भाजनस बराडा गुनी अधिक अभिदायक है। प्रायनाक समय काइ गाये यह ता भारा दुगरी बात मानी तापगी। प्रायना छूटने पर मनुष्यका बहुत दुस हाना चाहिये। भाजन चाह छूट जाय लेकिन प्रायना नहीं छटना चाहिये। भाजन छानना कभी कभी गरारखे लिए अभिदायक मानित हाता है। लेकिन प्रायनाक छूटनेसे ता कभी लाभ हा ही नहीं मरना।

लेकिन जा आदमी प्रायनामें माता है आत्म्य करता है बाने करता है सावधान नहीं रहना विचारका अनक स्थाना पर भटने देना है उगने प्रायना छोडी ऐमा हा कहा जायगा। प्रायनामें बव गरारका हाजिर रहना ठाग माना जायगा। जो आत्मी बव गरारले प्रायनामें हाजिर रहता है वह दाहरा दाप करता है यह प्रायनाका छानना है और ममाजरा घाता देना है। घाता दोरा मतल्प है अगत्यता आचरण करना मरये प्रतरा भग करता।

लेकिन न चाहने पर भा नीक आये या आत्म्य आये तब क्या किया जाय? यास्तामें ऐमा काई बात है ही नहीं। अगर बिमरामे उगतर माथ हम प्रायनामें पत्र जाय नथ ता नीद हा आपेगी। लेकिन प्रायनामें जानम पहल हमें जाप्रन हा जाना चाहिये दातुन करना चाहिये और तात्र व पुर्तिकि रहना निषय करना चाहिये। प्रायनामें एग-दूगरेमे गटर नहीं बना चाहिये गीप तनकर बटना चाहिये पीर पीरे नाम एनी चाहिये और उच्चारण अच्छी तरह करत आय ता ऊनी आवाजम नहीं ता मरने वा टगर या मजन

हमारी भावनाके अनुसार यज्ञका अर्थ है परोपकारके लिए हृदयसे किया जानवाला कार्य भी शारीरिक काम। लेकिन इससे यह नहीं मान लेना चाहिये कि जा आदमी शरीरसे कमजोर है वह यत्नहीन है— वह यत्न नहीं करता। जा आदमी शरीरसे बिल्कुल कमजोर हानके कारण कोई शारीरिक काम न कर सके वह अपनी मानसिक शक्तिसे जनक तरहकी सेवा कर सकता है। और ऐसी सेवा अवश्य ही यज्ञ मानी जानी चाहिये। लेकिन ऐसी स्थितिकी कल्पना की जा सकती है कि जब इस प्रकारका कोई यत्न करने जितनी शक्ति आत्मीय न हो ऐसा मनावना न हो और फिर भी यत्नकर करनेकी उसकी तीव्र इच्छा हो अपन शरीरके बारेमें वह उत्साहीन बन गया हो दूसरोंसे सेवा करानमें उस दुःख होता हो और राग प्राणघातक है उस बातका उसे विश्वास हो गया हो। ऐसी स्थितिमें मज्ञ लगता है कि जिसमें प्राणत्याग करनेकी शक्ति हो उसे ऐसा करनेका पूरा अधिकार है गायक यह भी कहा जा सकता है कि ऐसा करना उसका धर्म— कर्तव्य— है। लेकिन धर्म है ऐसा कहना सुननेवाले जादमीका जाघात पहचानवाला माना जा सकता है। प्राणत्याग करना दूसरोंका धर्म है यह वचन जीनवालेने मुहम गामा नहा दता। और ऐसी बात सुननेवाला रोगी गायक घबरा भी जाय। लेकिन ऐसा जनय होना यहां सम्भव नहीं है यह मानकर मज्ञ जो कुछ ठीक लगा वह अपनी मर्यादामें रहकर मन लिख डाला है। जनक उपाय करने और बहुत सेवा जनक वाक भी जीनकी तप्या— इच्छा— काम ही और मृत्युका भय मित्र यह हर तरहमें चाहने योग्य ही है। स्त्री दृष्टिको सामने रखकर मन लिखा है कि समयांतर आदमी असाध्य रोग हा जान पर प्राण त्यागको यदि जाना धर्म मान ता वह गलत काम ही करता है ऐसा माननेका कार्य कारण नहा है।

परबड़ा मन्दि

## प्रायना

प्रायना आश्रमका एक मूलभूत अंग है। इसलिए हमके महत्त्वका हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। प्रायना अगर मन लगाकर न की जाय तो मर विद्या-विराटा बेसार है। भाजन करने समय अन्तर बाई आत्मा माना नहीं देखा जाता। प्रायना भाजनन का गूनी अधिक लाभदायक है। प्रायनाके समय काइ साथ यह तो नारा दुःखका धार माना जायगा। प्रायना छूटने पर मनुष्यका बहुत दुःख हाना चाहिये। भाजन चाह छूट जाय लेकिन प्रायना नहा छूटनी चाहिये। भाजन छोडना कभी कभी मरीरके लिए लाभदायक मानिन हाना है। लेकिन प्रायनाके छूटनेम ता कभी लाभ हा ही नहा मन्ना।

लेकिन जा आत्मी प्रायनामें माना है आत्म्य करता है, बाने करता है साधन नहीं रहता विचारका अन्त स्थाना पर भक्त बना है उमने प्रायना छोडा एगा ही कहा जायगा। प्रायनामें ब्रह्म धारण हाजिर रहना ठाग माना जायगा। जा आत्मा ब्रह्म धारण प्रायनामें हाजिर रहता है वह धारण दाप करता है वह प्रायनाका लाहना है और ममाजका धागा देता है। धागा दना मत्त्व है अगस्त्य आचरण करता मयक प्रवका भग करना।

लेकिन न चाहन पर नी नीं आये या आत्म्य आश्रम तब क्या तिया जाय? वास्तवमें ममी बाई धान है ही नहीं। अगर बिम्बरले उन्कर मीप हम प्रायनामें बड जाय तर ता नीं हा आयगा। लेकिन प्रायनामें जानम पह हमें प्रायन हा जाना चाहिये मनुन करता चाहिये और ताक व पूर्ति रहना निश्चय करना चाहिये। प्रायनामें एव-दुःखका तावर नहीं बना चाहिये साथ तनकर बटना चाहिये धीर धीर मग रानी चाहिये और उच्चारण अच्छी तरह करने धार ता ऊर्षी भाषाजग नीं तो मनने जा इन्के या ब्रह्म

गाय जाय उह गाना चाहिय। यह नी न आय तो रामनाम लेना चाहिय। इस सन्के बावजद अगर हमारा गरोर बामें न रहे तो खड रहना चाहिय। बड हो या छोट किसीका भी एसा करनमें गरमाना नही चाहिय। गरम मिटानके लिए कभी कभी ताप न जान पर भी बल लोग खड रह।

प्राथनामें जा शोक या भजन गाय जाने ह उहें सबको तुरत समझ लेना चाहिय। ससृत समथम न आय ता भी शगकाका अय तो जान ही लेना चाहिय जोर उस अयका मनन करना चाहिय।

परवन्त मदिर

१९-६-३२

१४

### अहिंसाका पालन कैसे हो ?

सपको मारा जा सकता है या नही ? स्त्री पर बलात्कार करनवाक ब्यभिचारीका मारा जा सकता है या नही ? रतमें ह् चगनस जीव-जतु मरत ह यह जानने हुए भी ह् चगया जा सकता है या नही ? — एसे सवालको ह् करनकी बजटमें अहिंसाका उपासक न पड। म उरमनें जब मुश्कनी हागी तब अपन आप सुलझ जायगी। इन सवालकी भूभुठवाम फमनका अय है स्वय अहिंसाको भूल जाना।

जिने अहिंसाका पालन करनकी लगन है वह अपन हृत्पमें पठ कर लेत और आमपासक पनासिपाको दल। अगर मनमें बर भरा हो तो वह समथ ल कि उमन अहिंसाकी पहरी सात्नी पर भी बन्म नही रखा है। अगर वह अपन पढासिया और साधियजि साय अहिंसाका पालन न करता ह। ता कहा जायगा कि अहिंसास वह हगारा काम दूर है।

इसलिए ऐसा आदमी राज सौत समय अपन-आपसे पूछे क्या मन अपन साथीका अपमान किया ? उस कुरा खादी देकर मने अच्छी गानी गी ? उन कच्ची राटी देकर मन पत्की राटी गी ? मने कामचारी करके अपन साथी पर कामका दाज डाला ? वह इस तरह भा विचार करे 'आज मरा पडासी बीमार था लेकिन म उसकी मार मना करन नहीं गया। आज प्यास राहगीरने मयस पानी मागा लेकिन मन उगे पानी नहीं पियाया। आज जो मेहमान आये उन्हें मन प्रणाम नहीं किया। आज मने मजदूरका अपमान कर लिया उस पर निमी तरहका विचार किये बिना म काम लादना रहा कच्चा म डडम मारता ही रहा रगाईपरमें भात कच्चा रह जानस मुझ गप्पा आ गया। इन सब बातामें बहुत बड़ी हिंसा है। एम राजक बरतावमें हम स्वाभाविक रूपमें ही अहिंसा धमका पालन न कर ता दूसरी बातामें उसके पालनका योग्यता हममें आ ही नहीं सक्ता। अथवा दूसरी बातामें हम अहिंसा धमका पालन करते हा, ना भी उगरी बहुत कम बीमत है या बिन्तुन बीमत नहीं है। अहिंसा ता हर पन् और हर क्षण काम करनवागे एव प्रचढ गक्ति है। उगका परीणा हमार हर पन् काममें और हर पन्ने विचारामें होना रहनी है। जा मनुष्य अपनी पार्श्वी चिन्ता करता है उगका म्पया मुरगिन हा रना है। लेकिन जा पार्श्वी परवाह नहीं करता वह पाइ ता सोना ना है और म्पया बनी उगना हा ही नहीं मरना।

परवण मदिद,

२१-६-२३



## सत्यका पालन कैसे हो ?

जो बात अहिंसाको लागू होती है वही सत्यको भी हाती है। गायको बचानके लिए अमृत्य — झूठ — बोल जा सकता है या नहीं एसी उद्गमनम पत्रक हमारी आखोंके सामन रोज रोज जा कुछ होना है उसे भूठ कर सत्यकी माघना नहीं हो सकती। इस तरह गहरे पानीमें उतरनका मतलब है सत्यको ढक देना। आज जो समस्याये प्रतिदिन हमारे सामन खडी होती ह उनमें अगर हम सत्यका पालन कर तो फिर कठिन मौका पर सत्यका पालन कैसे किया जाय इसका रास्ता हमें अपन-आप मिल जायगा।

इस दृष्टिस हममें से हरएकको केवल अपनी आर ही देखना है। क्या अपन विचारसे म किनाका घाखा दता हूँ ? अगर म क को बरा मानता होऊ और उससे कहू कि वह अच्छा है तो म उसे घाखा देता हूँ। क्या म वग या अच्छा कहलानकी इच्छासे मयम न हो एसे गण दूसरोका बतानका प्रयत्न करता हूँ ? क्या म निसी बातको बडा चमार कहता हूँ ? किय हुए दोष जिसके सामन प्रकट कर देना चाहिय एसे आन्मीस क्या म व दोष छिपाता हूँ ? अपन माथी या अधिकारी जब वाई बात मयसं पूछत ह तब म जवाब दने समय क्या उनकी बातका उग देता हूँ बतान जसा उनसे कुछ छिपाता हूँ ? इन बातों स एक नी बात अगर म करता होऊ तो क्या म असत्यका आचरण करता हूँ ? इस प्रकार हरएक आधमवासीको राज अपन कामका हिमाव खुदसं लकर अपन आपको मुबारना चाहिय। जिन सत्यका आचरण करनकी ही आदत पत्र गई हो जा एसी स्थितिको पत्रब गया है कि असत्य वचन उनके मटस बनी निक्की ही न सके वह चाहे ता राज सदस एना हिमाव न माग। लेकिन जिसमें जरासा भी असत्य हा या जो प्रयन करव ही सत्यका आचरण कर सक उस तो ऊपर

बनाये अनुसार राज इन प्रश्नावा या ऐसे जितने पूजें उनत प्रसारा उत्तर अपन आपकी देना चाहिय । इस तरह जो एक महीना भी बरेगा उसे तुरन्त अपनेमें हुआ परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देगा ।

परवडा मंदिर

३-३-३२

१६

## विद्याभ्यास

सत्याग्र आश्रमात् इतिहास विज्ञाने विज्ञाने विद्याक सम्प्रथमं वा विचार मते मनमें राम तीर पर उठते रहत ह उनका मार आज में पहा दे रहा ह । आ मगमें कुछ लागावा विद्याभ्यासकी — यारी बिनाबी विद्याकी — बमी मानूम हानी है । म भी इस बमीना ममय मगता ह । अति गायक यह बमी ता आश्रमन गाय मग जुड़ी ही रहगी । एगन कारणानी म इस ममय बचा नहा सकगा ।

यह बमी हमें अगिण मानूम हानी है कि हमन विद्याभ्यासना मगता अथ नहा ममया है और उन अथवा विद्याभ्यास प्राप्त करनेवा नरीता नरी जाना है । या हम ऐगा मानकर ए ए है कि विद्याकी मौजूदा पद्धति बिन्दु कीव है । मरी दृष्टिमें आश्रमी विद्या — विद्याभ्यास — और उन ए ए नीर दनकी पद्धति दानामें बरा दाप है ।

मगता विद्याभ्यास वा है विद्याकी मगता हय आता आत्मावा एगन अतकी ईश्वरवा नीर मगकी महानन मते । इस महानन विद्या विमाना मानियक गायकी जगता हा मगती है विद्याका भौतिक विमानकी जगता हा मगती है और विद्याकी गायकी जगता हा मगता है । पगनु हय प्रयासकी विद्याका अथ आत्म-ज्ञान होना चाहिय । आश्रममें वा विद्याभ्यास बगता है उनका यही ध्य है । उनका ध्यानमें एगन हय आश्रममें अति काम बरत ह । य एव काम मते

अधम गद्द विद्याम्यास ह। आत्म दर्शनका हेतु न रखत हुए भी य ही काम किय जा सक्ते ह। परन्तु इस हेतुके बिना जब य काम चलाय जाने ह तब व जीवन निर्वाहका या दूसरी किसी बातका साधन बन जाय त्रेकिन ये विद्याम्यास नहीं ह। विद्याम्यासके पीछ समझ दारी कतय-पालनकी गन और सेवाकी भावना रहती है। और जहा समझदारी होती है वहा बढिया विकास हुए बिना नहीं रहता। छाटत छोटा काम करते समय हमारे मनम गभ सकल्प हाता चाहिय उस कामको करत हुए उसका कारण और उमका ग्रास्त्र समझनका हमारा प्रयन होना चाहिय। ग्रास्त्र — विज्ञान — हर कामका हाता माना बनानका सफाईका सुतारीका कतारका। जा आदमी विद्यार्थीकी दष्टिम हर काम करता है वह एस कामका ग्रास्त्र जानता है अथवा रचना है।

इतनी बात प्रत्येक आनमवासी समझ ता वट दखगा कि आधम एक महागान है जिसम एक निश्चिन समय ही शिक्षाके लिए नहीं हाता बल्कि मारे समय गिणाका काय चरता रहता है। एना हर आदमी जो आत्म-ज्ञान — सत्यक दान — की भावनास आधमय रहता है गिणक भी है और विद्यार्थी भी है। जिस काममें वह कुण है उसका वह गिणक है जा काम उसे सीखना है उसका वह विद्यार्थी है। जिस बातका हमें पडोसीस अधिक जान हा वह अपन पडासीको बिना किसी सकोचके हम सिखाते ही रह और जिस बातका जान हमारे पडासीका अधिक हो वह बात हम बिना किसी सकोचक उसस सीय लें। इस तरह जानका ज्ञान-ज्ञान चलत रहें तो हमें गिणकाका तगी न रह और गिणा सरत और स्वाभाविक बन जाय। ऊर्वासे ऊर्ची गिणा चरित्रकी है; जम जस हम यम नियमाके पालनमें आग बन्ने जायग वम वस हमारी विद्या — सत्यका दान करनका गक्ति — बलता ही जायगा।

तब अफर जानका माहितियक गिणाका क्या हागा? यह सवाल अब रहना ही नहीं है। जा बात दूसरे कामाके लिए सब है वहा अफर जानक लिए भी सब है। ऊपर मत जानक लन-लनकी जो याचना

बनाई है उसमें एक भ्रम दूर हो जाता है — वह भ्रम गालीब मकान और गिगानागार गिगनम सम्बन्ध रखता है । हमारे मांतेर अगर गान प्राप्त करनेवा इच्छा पण ही तब हमें समान लना चाहिये कि य गान हमें अपने ही प्रयत्नसे प्राप्त करना है । इसका गिग आधममें गजाग ता है ही । ऊपर गिग अपनी बात अगर म सत्रका अच्छी तरह मय्या मका हाऊ ता अन्तर गानकी ममस्या हूँ हा जाता है । गिग पास य गान है बट दूनराका ममय ममय पर देता जाय और दूनर उमे लन जाय ।

परवडा मदिग

१०-७-३२

१७

## व्यक्तिगत प्रार्थना

व्यक्तिगत प्रार्थनाके बारेमें मैं पण्ड कुछ गिग बुता हूँ । लेकिर उयव महुक्क वारमें किरमे कुछ गिगनेका जफरत मान्य हातो है । मुता गता है कि मामूहिक प्रार्थनामें गिगनेका पण न हावेका लन पारण यह हा गता है कि हमा व्यक्तिगत प्रार्थनाका आवश्यकताका मगभाति ममगा नही है । व्यक्तिगत प्रार्थनामे ही मामूहिक प्रार्थनाका धरण्या हुई है । व्यक्तिग अन्तर प्रार्थनाकी भूग न हा, ता ममात्रका बग हा गतनी है ? मामूहिक प्रार्थनाका उपयोग भी व्यक्तिग लभक गिग ही है । मामूहिक प्रार्थना व्यक्तिग आम-गानमें — आम-गानमें — मण पदुसानी है । इगलिग तबका व्यक्तिगत प्रार्थनाके कामत ममय लनी चाहिये । बकरा ममगानर हुआ कि माना उग हाररता प्रार्थना गिगती ही है । मब परोंकि गिग यह माधारत बात है ।

एग प्रार्थनाके दो ममय ता सगट ही है प्रात-काण जाण्ड हा मगगमा परपागमाका मा गता चाहिये और रातमें गान ममय भा उग मा करता चाहिये । गानर बीपर ममयमें गण्ड गी और

पुरुष अपन हरएक कामके सम्बन्धमें भगवानको याद करेग और उसे अपन हर कामका साक्षी बनायेंग। जो एसा करेगा वह बरा काम तो कर ही नहीं सकता। और अन्तमें उसे एसी आदत पड जायगी कि वह अपन हर विचारका साक्षी और स्वामी ईश्वरको बनायगा। यह स्थिति अपनको गायबत् बना लेनकी है। इस तरह जिसके सामन ईश्वर हमेंगा मौजूद रहता है उसके हृदयमें हमेंगा राम बसते ह।

एसी प्रायनाके लिए किसी विषय मन या भजनकी जरूरत नहीं रहती। यद्यपि हरएक क्रियाके आरम्भ और अन्तके लिए मन देखनमें आत ह लेकिन उनका होना जरूरी नहीं है। असल बात विमी भी नामसे किसी भी तरीकेसे और किसी भी हात्तमें ईश्वरको याद करनकी है। एसा करनकी आदत बहुत थोड योगाका होती है। अनक आगाको एसी आदत पड जाय तो दुनियाम पाप कम हा जाय मन्त्रिता कम हा जाय और आपसका बरताव गढ बन जाय। एसी गभ स्थितिका पहुचनके लिए हर मनष्यको मरे बताय हुए दा समय तो प्रायनाके लिए रखन ही चाहिय दूमरे समयकी व्यवस्था भी वह सत् कर ल और हमेंगा उह बटाता रहे जिससे अन्तमें उसकी हर सासक माय रामनाम निकलन ग।

इस यक्तिगत प्रायनाम समय बिगुल नहीं जाता। उसके लिए समयकी जरूरत नहा होता परन्तु जागतिकी आवश्यकताकी जरूरत हाती है। जरा आल भीचनमें बाई समय जाता माग्म नहीं हाता वस ही यक्तिगत प्रायनामें भी समय जाता माग्म नहा होता। लेकिन जिन प्रकार आखाकी पलकें अपना काम करती हैं उसी प्रकार प्रायना हमारे हृदयम चलनी चाहिय। एमी प्रायना करन वालेका याद रखना चाहिय कि जिनका मन मग है वह इस मन्का रहन दवर प्रायना नग कर सनता। इसलिए प्रायनाक समय उसे यह मन् मनन निराग ही दना चाहिय। जिन प्रकार विमी मनष्यके देखते हुए वह मला काम करनमें गरमायगा उसा प्रकार ईश्वरक सामन ना मला काम करनमें स गरम आनी चाहिय। लेकिन ईश्वर ता सग हमार हर कामका रचना है हमार हर विचारका

जानना है। इसलिए एक भी क्षण ऐसा नहा हाता जब उनमें छिपा कर हम कोई काम या विचार कर सकें। इस तरह का सच्य और गढ़ हृदयमें प्रायता करगा, वर अनमो इस्वरमय बन जायगा — जयान् पापरहित हा जायगा।

यररडा मन्दिर,

१७-७-३०

१८

### दयरेखकी जरूरत नहीं

यह गीयक मरको धौनानका है। ऐसा गीयक दरर में यह नहीं मुपाना चाहता कि आज हम लगेलेव बिना अपना कामकाज कर सकत ह। एकिन यहाँ में दयरेख कम करनक और अनमो ग्य विष्णु मन्म कर दनके उपाय जम्न मुजाना चाहता ह।

धार्मिक मस्थामें लगेलेव करनकी जरूरत पड ता ममजना सन्धिे कि उगमें धमकी उतनी कमी है। दयरेख पीछे अविवागता भावना रहती है। और अविवाग धमका — आत्माना — पाता है। इस्वर गवरा स्वता है। तब हम किस पर दयरेख कर? जिम आत्माने भाजन धनानका या पापान माफ करनका जिम्मदारा अपन मिर ली हा यद् गुरु हा अरता काम अन्गी तरतू क्या न कर? यद् अरता काम अन्गी तरतू करगा एगा जियाग हम क्या न रगे? लगेलेव बिना जो आदमी जिया हुआ काम अन्गी तरतू पूरा न कर क आश्रम राड न। उरता आश्रम छोडना गहन हा मरता है एकिन लगेलेव ता मन्म हारी ही नहीं चाहिय। हमारे रात्रक कामा हािगाव हा हमारी दयरेख है।

महाँ लगेलेवरा अथ हमें ममज लना चाहिये। यानका लगेलेव जरूरी हाता है। उम काम करनता नहीं आता इन्जि मौरा हुआ काम न। सिवा जाय यह उा काना जरूरत हाता है। यदा

पुरुष अपन हरएक कामके सम्बन्धमें भगवानको याद करेग और उसे अपन हर कामका साक्षी बनायेंगे। जो ऐसा करेगा वह बरा काम तो कर ही नहीं सकता। और अन्तमें उसे एसी आदत पड जायगी कि वह अपन हर विचारका साक्षी और स्वामी ईश्वरको बनायगा। यह स्थिति अपनको गूयवत् बना लेनकी है। इस तरह जिसके सामन ईश्वर हमेगा मौजूद रहता है उसके हृदयमें हमेगा राम बसते ह।

एसी प्राथनाके लिए किसी विनाय मत्र या भजनकी जरूरत नहीं रहती। यद्यपि हरएक क्रियाके आरम्भ और अन्तके लिए मत्र देखनमें जाते ह लेकिन उनका होना जरूरी नहीं है। असल बात किसी भी नामसे किसी भी तरीकेसे और किसी भी हालतमें ईश्वरको याद करनकी है। एसा करनकी आदत बहुत थोडा योगाका होता है। अनक योगाको एसी आदत पड जाय तो दुनियाम पाप कम हो जाय अनक मन्त्रिता बन हो जाय और जापसका बरताव गढ बन जाय। एमी गभ स्थितिको पहचनके लिए हर मनष्यको मरे बताय हुए दो समय तो प्राथनाके लिए रखन ही चाहिय दूमरे समयकी व्यवस्था भी वह खु कर ले और हमेगा उह बढ़ाता रहे जिससे अन्तमें उसका हर सासके साथ रामनाम निवृत्त ग।

इस व्यक्तिगत प्राथनामें समय विरुद्ध नहीं जाता। उसक लिए समयकी जरूरत नहीं हाती परन्तु जागतिकी सावधानीकी जरूरत हाती है। जस आप माचनमें कोई समय ताता मात्रूम नहा हाता वसे ही व्यक्तिगत प्राथनामें भी समय जाता मात्रूम नहा होता। केविन जिस प्रकार आपसानी पत्रों अपना काम करती ह उसी प्रकार प्राथना हमारे हृदयमें चल्नी चाहिय। एमी प्राथना करन चाहेका या रखना चाहिय कि जिसका मन मग है वह इम मलना रहन दकर प्राथना नहीं कर सकता। कसलिए प्राथनाक समय उस यह मत्र मनस निराग हा दना चाहिय। जिस प्रकार किसी मनुष्यक दानत हुए वह मला काम करनमें गरमायगा उसा प्रकार ईश्वरक सामन भा मला काम करनमें उस गरम आनी चाहिय। लेकिन ईश्वर तो मग हमार हर कामका दानता है हमारे हर विचारको

जानता है। इसलिए एक भी क्षण एमा नहीं होता जब उससे छिपा कर हम कार्रवाई या विचार कर सकें। इस तरह जो सच और गढ़ हृदयसे प्रायना करेगा, वह अन्तमें ईश्वरमय बन जायगा — अर्थात् पापरहित हो जायगा।

वरुदा मंदिर,

१७-७-'३२

१८

## देखरेखकी जरूरत नहीं

यह गीपक सबको चौकानवाण है। एसा गीपक देखर में यह नहीं गुणाना चाहता कि आज हम देखरेखके बिना अपना कामकाज क्या करत ह। लेकिन यहाँ मैं देखरेख कम करनेके और अन्तमें उन बिल्कुल मतम कर देनेके उपाय जल्द सुवाना चाहता हू।

धार्मिक महयामें देखरेख करनेकी जरूरत पड तो समझना चाहिये कि उसमें प्रमती उतनी प्रमी है। देखरेख पीछे अविश्वासी भावना रहती है। और अविश्वास प्रमता — आत्माना — घातक है। ईश्वर सबका रक्षक है। सब हम विश्वास पर देखरेख कर? जिस आत्मीय भोजन ब्रह्मज्ञानकी या पापान भाग करनेका जिम्मेदारी अपन मिर ली हो या गुण ही अपना काम अच्छी तरह क्या न करे? वह अपना काम अच्छी तरह करेगा एसा विश्वास हम क्या न रखें? देखरेख बिना जो आदमा किया हुआ काम अच्छी तरह पूरा न कर कर आधम लोड द। उगता आग्रम छोड़ना गहू ह। मरता है लेकिन देखरेख का मरन हाथी ही नहीं चाहिये। हमारे रोजर कामका रियासत ह। हमारी देखरेख है।

यदा देखरेखका अर्थ हमें समझ लेना चाहिये। देखरेखी देखरेख जल्दी हाथी है। उस काम करना नहीं आना इगाम्बि गीप हुआ काम है। विश्वास साथ यह उन ब्रह्मज्ञान जरूरी \*। यदा



## आश्रम-जीवन

उमरवात्रामें भी जिहे अमक काम करत नहा आता उनकी देखरेख रखना जरूरी होता है एसी देखरेखकी व इच्छा भी रखते ह। सच पूछा जाय तो एसी देखरेख देखरेख नहीं है परंतु गिनककी सहायता है। इस सहायताके बग पर नय सीखनवात्र लोग आग बढ़ते ह।

लेकिन जो देखरेख चौकीके रूपमें की जाती है जिसे काम सौपा गया है वह अपना काम अच्छी तरह करता है या नहीं इसकी चौकी रखनको भी जाती है वह बरी चीज है। बालकाकी भी एसी चौकी ठीक नहीं है। इस दापस बाहर निकलनका रास्ता हमें खोजना चाहिय।

इस खोजकी पहली सीढी यह है जिन जिन कामा पर देखरेख रखी जाती है उह नोट कर लेना चाहिय। उनमें कौन कौन आदमी काम करते ह यह देख लेना चाहिय। उनके साथ कामके सम्बन्धमें बातचीत करके उनकी साल पर उह छाड देना चाहिय। सस्थापकको और दूसरे लोगानो इस बातका पूरा भान होना चाहिय कि ईश्वर सबसे बडा सामी है। बालकाको भी आजमे ही ईश्वरकी हाजिरीका भान होना चाहिय। यह कई बहमका अंधविश्वासकी बात नहा है एसमें सन्तुहकी भा गुजाइग नही है। हम अपनी हस्तीका जितना विश्वास है उतना ही विश्वास रखनका यह बात है।

मेरे इस सुभाव पर सब लोग विचार करे। और जिस हद तक इस पर अमक करना समभव हो उस हद तक अमक करना हमारा धम है।

बरबडा मन्त्रि

२४-७-३२

## गीताको कठस्य करो

गीताका कठस्य करने — जवानी याद करनेके धारेमें मैं बहुत बार गिय चुका और वह चुका हू। मैं तुम्हें गीताका कठस्य नहीं कर पाया हू। इसलिए मुझे यह कहना गीता नहीं देता। फिर मैं बार बार यह बात कहनेमें मुझे गरम नही आता। क्योंकि मैं गीताका कठस्य करनेके लाभ जानता हू। मरने का जगत्तम चक्का रहा है क्योंकि मैं एव काग तो तरह अध्याय कठ कर गिय थे और गीताका मनन गीतामें कहा हुई बातों का गहरा विचार तो मैं बरताने करता रहा हू। इसलिए यह कहा जा सकता है कि मेरा जीवन कुछ हूँ तब गीताकी छायामें बीना है। लेकिन अगर मैं पूरी गीता याद कर सकूँ तो गीताके वचनमें और भी गहरा उतर सरा जाना तो सम्भव है मुझे आजमें वही ज्यादा लाभ मिलेगा। लेकिन मरने तो जो हुआ या हुआ या भविष्यमें भी जा होना ही तो होगा मरने समय तो अब बीत चुका माना जायगा या हम ऐसा मानें यद्यपि मुझे आगामीसे मोक्षा मिले तो मैं आज भी फिरसे गीताको कठ करनेका प्रयत्न शुरू कर दूँ।

यदि हमें गीताका याद यापक अब करना चाहिये। गीता अर्थात् हमारे जीवनका आधार बना हुआ ग्रन्थ। हममें से कौनसा आधार गीता ही है इसलिए मैंने गीताके नामका उपयोग किया है। लेकिन अन्तुःकरणमें अमाना या कुली' गीताके वचनोंमें पूरा कुरान पारीष या उमरा कुल भाग कठ कर लें। जिन्हें मरने जरा भी नही आती जो अब गीता भी नहीं मानते व मुजगना या हिन्दीका अब याद कर लें। जिन्हें गीता पर उदा न हो परन्तु दूसरे किसी धर्मग्रन्थ पर हा वे उम समयको कठ करे।

मैंने हमें कठ करनेका अब भी प्रयत्न करना चाहिये। जिन्हें कठको हमें कठ कर उमके आगाम अन्तगार बन्दार करनेका हमारा

१ आद्यसकामी ।

आग्रह होना चाहिये। हमारा व्यवहार प्रथमों दिया गया बुनियाती सिद्धान्तोंके खिलाफ नहीं होना चाहिये। जिस प्रथमका या उसका जिस भागको हम कठ कर उसका जब हम अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

कठ करनका फल यह है हमारे पास यदि कठ किया हुआ प्रथम न हो वह चोरी चंग जाय या जल जाय हम रास्ता चन्ते चलते भटक जाय हम अध हो जाय हम बोल न सक लेकिन हमारी समझनकी शक्ति धनी रहे—एसी दूसरी बातोंकी भी कल्पना की जा सकती है—तब अगर हमारा प्रिय और जीवनका आधार बना हुआ प्रथम हमें महसे याद हो तो वह हमारे लिए बड़ी शक्ति देनेवाला रास्ता दिखानवाला और मसीवतका साथी बन जाता है।

सारे जगतका अनुभव भी ऐसा ही है। हमारे पुरख—हिन्दू मसज्मान ईसाई पारसी सब—कोई न कोई पाठ कठ कर लेते थे। आज भी बहुतेस लोग ऐसा करते हैं। इन सबके अनमोल अनभवकी हम उपेक्षा न कर। इसमें कुछ हद तक हमारी नब्दाकी परीक्षा होगी।

यरवडा मंदिर

३१-७-३२

## डॉ० प्राणजीवनदास मेहता

अगर मैं इस समय आश्रममें जाता तो इस पुण्यात्माके विषयमें कुछ न कुछ बहता। डॉ० मन्ना मेरे तो सबसे पुराने साथी मान जायेंगे। मैं विनायक (बानून पदन) गया था तब मैं उनसे सम्बन्धमें आया था। वह मन्वन्ध दिन दिन बढ़ता ही गया। विलायतमें सत्रस पहुँची भेट मरा उर्हूँके साथ हुई थी। और पहुँच ही उन्होंने मुझे रास्ता दिखाया। गरु पर दिया था। लकिन यह सत्रस तो मरने आत्मनया 'में आया है। यहा मैं हम दानके गहर मन्वन्धके बारेमें नहीं चिन्ता चाहता। डॉ० महतामें एक यौनग गुण थे जिन्का वजन मैं उर्हू पुण्यात्मा — पवित्र पुत्र — मानता हूँ? यह जानते हम उनके गुणों अनुकरण कर सकेंगे और मनमें यह श्रद्धा रख सकेंगे कि वे जो कुछ अपने जीवनमें कर पाये वह हम भी कर सकते हैं।

डॉक्टर महताका घाट मडियाँ कश्मिरा मुसलमानोंके मिले था। यहाँमें विनायक जाकर उन्होंने अधिक परीक्षाएँ पाई थीं वे बरिष्ठ बन, यह सब मैं छाड़ देता हूँ। मय योग विद्वान नहीं बन सकत। इनके लिए बाहरी परिस्थितियों अनुकूल होना चाहिये। मनुष्य अपना विद्याके कारण नहीं पूज जात परन्तु अपने अच्छे गुणोंके लिए पूज जात है। डॉक्टर महतामें मन दुर्गा यौनका उत्तरता पवित्रता मय प्रेम आत्मा मादगा धर्मका गुण दिन दिन बढ़त दगे हूँ। कर्त्तव्य कर लनके साथ उनका यह निश्चय किती भी हानतमें बरताया गया था। दुर्गाके आगमनके बाद उनका बचतका विनायक करत थे। डॉक्टर मन्ना जिन्से कहत थे। विनायकके लोके पर जब उन्होंने ऐसा कि

---

१ मन्वन्ध प्रयोग अथवा आत्मनया — नवजीवन द्वारा प्रकाशित।

जपन जन्मस्थान मोरवी (काठियावाड़) में वे जपन स्वाभिमानकी रक्षा नहीं कर सकते तब उन्होंने मोरवीको हमेशाके लिए छोड़ दिया।

डाक्टरकी उम्मीदका कोई पार ही नहीं था। उनका घर धमगागा बन गया था। दान पानकी योग्यता रखनवाला को गरीब उनके पाससे खाली हाथ नहीं लौटता था। उन्होंने अनक गंगाका पाठन-भोजन किया था। डाक्टरके सारे दान बिना किसी आडंबरके होते थे। उन्होंने कभी जपन दानका डिग्री नहीं पीटा। उनक दानके लिए जात पात या प्रान्तकी कोई मर्यादा नहीं रहती थी। हिट स्टानक सारे प्रान्तोको सारी कौमाको और सभी धमवागका उनक दानका लाभ मिला था। डॉक्टरके पास धनका भण्डार भरा था किन्तु इसका उन्हें धमड नहा था। इस धनका अपन मुल और एग आरामके लिए उन्होंने कमसे कम काममें लिया था। कहा जा सकता है कि अपन विद्यालय बगलेमें उन्होंने अपन लिए कमसे कम जगह रखी था। अपन मौज मौकके लिए उन्होंने थोडा भी पसा उड़ाया हो ऐसा मझ याद नहीं आता। मैं मानता हूँ कि डाक्टरन एकपत्नी-व्रतका बन्नी दृष्टतासे पालन किया था। उनक धर्मोसे ब्रह्मचर्य उनका बहुत प्रिय विषय बन गया था।

जीवनक पहल कालमें डाक्टरकी धम-पुस्तकें पढ़नका मौक पायद ही रहा होगा। लेकिन बादमें यह मौक उनमें बढ़ा था। यहां मझ उन्होंने जो पत्र लिखा था उसमें उन पुस्तकाक नाम दिये जा ब पड रहे थे। वे सब धार्मिक पुस्तकें ही थीं। जहां तक मैं जानता हूँ डाक्टरन अपन व्यापारमें और बकायतक धधधमें सत्यके व्रतका पालन किया था। मैं जानता हूँ कि अमत्य और बागस ब बड़ी नफरत करते थे। उनकी अहिंसा उनक चेहरे पर लिखा रहती थी उनकी आत्मामें साफ पत्नी जा सकता था और वह दिनदिन बडना जाती था। वस ता आत्माके रूपमें कोई मरता ही नहीं। किन्तु डाक्टर जस मनुष्य अपन गुणाके बन् पर विचार अमर हो जान ह। आश्रमर साथ उनका जा गहरा सम्बन्ध था वह आश्रमकी धार्मिक वृत्तिका

पाठन करनेवाला था। हम पुष्पात्माके जावनन हमें अपना गतिक  
अनमार नीवना चाहिये।

परखन मन्त्रि

७-८-३२

२१

## वाचन और विचार

१

हम गान्धामें मावने हैं विचारक विना वाचन बकार है।  
य वा वा माग्हा आन मत्र है। हममें पठनरा गीक हा पट् वाग्ना  
वान है। जा गग आम्मी कर्हम गिग्ना नग् एन पुम्नके नग् पठन  
के मूग महे जाधग। म्त्रिन जा मिक पठन हा रहन ह और विचार  
नगे करत य भा लयमग मूग जम ही रहत ह। हमरे गिग्ना  
पठन पठन बुग् गग आवे गवान ह गा अग्ग। कर्त पुम्नक पठना  
एर मग्गा राग हा माना जायगा।

हममें गिग्ना पढ़ाई करनका वन गग हाते ह। य पठन ह  
एगिन विचार नग् मग्ग। मत्र फिर पढ़ हूग पर अमग् गा करे  
है। तरा गे? इगिग्ना पाठा ही पढ़ना चाग्गि उग पर विचार करना  
चाग्गि और उग आग्गममें उकारना चाग्गि। आग्गण करन पर जा  
वान टाक उग्ग उग हाग्ग एता चाग्गि और अग वनना चाग्गि। गगा  
करनका मन्त्रि पाठा पठनर आता काम चाग्ग मवना है वहनग  
गग्ग वगा गरना है और नगे काम करनकी विग्गगा उगत लग्ग  
वता है।

सुविधा न मिलने पर पागल जस होते देख गये हैं। लेकिन जिन्हें विचार करनेकी जादत पट जाती है उनके पास विचारोन्मी पुस्तक ता नया मौजद ही रहती है। इसलिए उनके पागल बननेकी नीवत कमी नहा आती।

विचार करना सीखना चाहिये इन गणनाका प्रयोग मत जान बूझकर किया है। सच्चे-सूठ निक्कमे विचार तो बहुतेरे लोग किया करते हैं। लेकिन वह निरा पागलपन है। कुछ लोग विचाराके भवरमें फंकर आत्महत्या तक कर लेते हैं। ऐसे विचाराकी बात मत यहा नहा रहता। इस समय तो मेरा सन्नाह इतना ही है कि हम जो कुछ पणें उस पर विचार कर। मान लीजिये कि आज आपन एक भान सुना या पना। उस पर आपका विचार करना चाहिये। उसरा रहस्य उसके भीतरका गूढ अर्थ क्या है उसमें से मझ क्या लेना चाहिये और क्या नही लेना चाहिये—इस बातका आपको जाच करनी चाहिये। उगम अगर कोई दोष हो तो उसे भी दबना चाहिये। उमका अर्थ समझमें न आया हो तो अर्थ समझ लेना चाहिये। यह सारी विचार करनेकी पद्धति वही जायगी। यह मन मरनेसे सरल उगाहरण किया है। इसमें से सब लोग अपनी गकिनक अन्तमार दूसरी बातें साचनका मसामान निकालें और जाग वर। एसा करनेवाके अन्तम आत्मानन्का अनभव करेण और व जा कुछ भी पणें वह सब लाभकारी सिद्ध हागा।

परबडा मन्त्र

१४-८-३२

२

उठ जाग मुसाफिर भोर भूँ

अब रन कहा जो भावत है?

—है मुसाफिर तू उठ जा सबरा हो गया अब रात कहा है कि तू मा रहा है? इस भजनका कवण इतना ही अर्थ समझ कर कोई यह माने कि उमन भजनका सारा रहस्य समझ लिया है

ता कहा जायगा कि उसने पत्नी तो है लेकिन विचार नहीं किया है। क्योंकि वह बेचक गवरे उठकर ही अपना कृतार्थ हुआ मानेगा। लेकिन जो विचार करना चाहेगा वह तो अपनेसे पूछेगा ममाफिर कौन है? गवरा हानका क्या अर्थ है? मानका क्या अर्थ है? हम तरह विचार करने वह प्रतिदिन एक ही शरीरम ग अतर अर्थ निकालेगा और समझ जायगा कि यहा ममाफिरका अर्थ है ममाफिरकार प्राणी। जिसकी ईश्वर पर भ्रष्टा है उमक लिए ता ममा गवरा ही है। मानका अर्थ यम अज्ञान भी हा मवता है। और जो मनुष्य जरा भा जमावधान — गपरवाह — रता है उम पर मवनरी मोनेरी बात गगू हानी है। जो झूठ वाकता है यह भा गोपा हुआ है। उम भी जाग्रत करनकाय यह लकार है। इस प्रकार यह लरीरमे व्यापक अर्थ निपा कर जीवनमें आश्रामन प्राप्त किया जा सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि एक लकार पर किया हुआ गहरा विचार मनुष्यक लिए आध्यात्मिक भाजनका रूप ल गयता है। और चारा व बठ कर लनका तथा उनक अर्थ भी जाननवालेने लिए य गय बासक्य बन मवन ह। यह तो मन जा उगाहण पा आ गया वही यहा रग दिया है। मव आश्रमवागा आगी अगी लिंगा तय कथ विचार करन लों ता वे जीवनम मे नय नये अर्थ मोक निरालेस और निरजया आन लूने।

परवडा मदिर,

२१-८-३२



## २२ विचारपूण काय और विचारहीन काय

१

वाचन और विचार करनेके बारेमें तो मैं लिख चुका हूँ। आज मैं काय और विचारके बारेमें थोड़ा लिखता हूँ। मैं विचार करनेकी कलाको सच्चा गिना मानता हूँ। यह क्या हम सीखें तो दूसरी सब बातें इसकी पीछे सुन्दर ढंगसे अपना अपना स्थान ले लगीं।

जिस स्त्रीन नवलेकी खूनसे सना हुआ मह देखकर उस पर अपना पानासे भरा मटका द मारा उसने बिना साचे विचारे बहुत बरा काम कर डाला। अतम अपन बालकका सापसे बचानेवाला नवलेकी हत्या करनेके कारण उसे बहुत पछताना पडा और इस बच्चेका वह जिन्गी भर मिना न सकी। उसका मटका फूट गया और पानी बह गया यह बात तो गिनताम उन जसी भी नहीं माना जायगी। इसलिए उस स्त्रीन नवलेकी मारकर बहुत बडा अपराध किया।

यह उदाहरण तो अतिम सीमाका कहा जायगा लेकिन उससे हमारा ध्यान मल विचार पर अच्छी तरह जम सकता है। आत्ममें हम जितने काम करते हैं वे सब विचारके साथ कर तो आत्मकी गति बर करनेवाली कुशलता बर बहुतसा समय बचे और काममें हनगा नया रस पना हो। बहा बलाकी मददसे हम रहट बगत हैं। बर बहुत महनत करते हैं लेकिन उनका ज्ञानम कोई बढ़ती नहीं जाता। अपन काममें उन्हें कोई रस नहीं होता। मिर पर काम देनेवाला आदमा न बडा है ता बर रहट नहा चलायग। लेकिन हम तो मनुष्य हैं। मनष्यका अर्थ है विचार करनेवाला जानवान प्राणी। हम जान बरानी तरह बभी रह या बरत है नहा सक्त।

आत्ममें हम पाखान साफ करते हैं। विचार किय बिना हम यह काम करें ता वह हमें हाना पगगा बुरा पगगा और हम यही

माचने रखेंगे कि इस काममें हमें क्या छुट्टी मिलेगी। विचारक साथ यह काम करेता है हम समय देंगे कि पाखाने साफ करना हमारा धर्म है। साफ करनेवाला मतलब है पाखानेका विकृत साफ-सुधरा बनाना मरना अच्छी तरह जमीनमें गाड़ना, सफाईके जोखार साफ रखना और मलका परीक्षा करना। मरने में मृत्यु है। मरना है या मृत्यु है तो हम समझेंगे कि आश्रममें कोई बीमार है। और हम यह खोज निकालेंगे कि कौन लोग बीमार है। हर पाखानेका उपयोग कौन कौन करता है हमारा पता तो हमें होगा ही। इससे मिला अगर पाखाना साफ करने समय पाया जाय कि मलको मिट्टीमें अच्छी तरह डरा नहीं गया है, मल अपनी जगहसे बाहर भी पड़ा है पनाब भी नाचे गिरा है तो यह गंभीर करनेवालाका हम दूढ़ निकालेंगे और नदरताम उन एमी मरनी न करनेके लिए समझायेंगे। यह मर वही कर मरगा जा सवाकी भावनासे पाखानेकी सफाई करेगा। हमारे काम हमारे काममें विचारका प्रवेश होगा जैसे जैसे वह सुधरगा सरल बनगा और ज्वनके बल हमें उनमें रम आयगा। यहाँ मन पाखानेसे गम्य रहनेवाले मनुष्य विचारा पर प्रसाध नहीं डाला है। सिर्फ एक नमूना ही दिया है।

हम कतार्द-यज्ञका हैं। उनका बारेमें भी विचारपूण काम किया जाय तो हमें रणक घुट पानेका मिलेगा और काननेकी कर्माँ हानेका प्रगतिवा कभी अन्त ही न आवेगा। सब लोग विचारक साथ मृत कानें तो हम अन्तक न-शामें कर सकेंगे और मृत भी अच्छी अच्छी काम करेंगे।

यही बात प्रायनाका भी लागू होगा है। प्रायना क्या है? प्रायना हम क्या करते हैं? मोन हम क्या करते हैं? प्रायना सम्युक्तमें क्या जाना है? मुजरानी मरती या हिंसी भाषामें क्या नहीं जाना? —एक मनुष्य विचार करके हम प्रायनाको एक प्रकाश दक्षिण बना सकते हैं। दक्षिण आर तो एका मात्र ही होता है कि प्रायनाके बारेमें हम कर्मका काम विचार करते हैं।

योग कमसु कौशलम् — यह गीताका बड़ा गभीर और प्रौढ विचार है। योगका अर्थ है मल साधना। ईश्वरके साथ मेल साधनका अर्थ है योग। गीतामातामन हमें सिखाया है कि कममें कुशलता प्राप्त करनेसे यह योग आसानीसे सधता है। कुशलता प्राप्त करनेकी सलाह रखनेवालेको कममें लीन अर्थात् विचारमय होना ही चाहिये। विचार प्रवृत्त तकनी पर सूत कातनेवालेन चरखकी महान खोज की। और विचारप्रवृत्त चरखा चलानेवालेन हजारों तकुआवाला यांत्रिक चरखा बनाया। मरी दृष्टिसे यांत्रिक चरखा बनानेवालेन बढ़िका उपयोग ता सब किया लेकिन हृदयका उपयोग नहीं किया। इसलिए विचार भी गभ विचार होना चाहिये धमकी भावनासे भरपूर होना चाहिये। फिर भी विलकुल विचार न करनेकी अपेक्षा यत्रकी खोज करनेवाले मनुष्यकी विचार शक्ति पूजन लायक ही मानी जायगी।

यखड़ा मंदिर

२८-८-३२

२

काम करते समय भी विचारकी शक्तिका पूरा उपयोग करनेके बारेमें मैं इससे पहले लिख चुका हूँ। उस लेखके अन्तमें मैंने जो विचार प्रकट किया था उस विस्तारसे समझाना जरूरी है। उसमें मैंने बताया था कि विचार समाजका पापण करनेवाले भी हो सकते हैं और उसका नाश करनेवाले भी हो सकते हैं। विचार दबी भी हो सकते हैं और आसुरी भी हो सकते हैं। एक मनुष्य चरखा चगाते चगाते उसमें ऐसे सुधार करनेका विचार कर सकता है जिससे चरखा चलानेवाले लाला या बरोडा योगका आराम मिले लाभ हो। दूसरा मनुष्य ऐसा विचार कर सकता है कि बट खर ही एक चरखेन लाला आदमियाकी कताई जितना मूल काते और गत्ता खपय कमाय ता कसा बरग हो? पहले मनुष्यके विचार दबी हैं समाजका पापण करनेवाले हैं दूसरे मनुष्यके विचार आसुरी हैं समाजके भलेकी नकमान पहुचानेवाले हैं। इसलिए हर काम करते समय बतल विचार

करना हा हमारे लिए बाधा नही है। परन्तु व विचार सबका भंग करनेवाला होना चाहिये सिर्फ हमारा ही मतत्व साधनेवाला नही होने चाहिये। मच ता यह है कि जो आदमी सिर्फ अपना ही मतत्व साधनेका प्रयत्न करता है वह दूसरोंका ता नुकसान पहुंचाता हा है अविन आमें अपना मतत्व भी साधनेमें अमग्न रहता है।

इस दृष्टिसे अपने मामने रखकर अगर सब गग अपन हर कामके बारेमें विचार कर और समझानाराम काम कर ता व उत्तम गिना ग्रहण करत है अपन कामको आनंद देनेवाला बनाते ह अपनी बढ़िया विकास करत ह अपन हृदयका विगाट और शुद्ध बनान ह काममें कुशलता प्राप्त करत ह और उममें समाजका भंग हा एमा मारें और सुधार करत हैं। इसका नतीजा य हाता है कि अपन काममें उनका रम बढ़ता है जिससे उन्हें आनन्द हाता है काममें उन्हें शांति नही लगती और वह कर्णपूर्ण बनता है। फिर मने वह काम पानन माफ करनेका हा समन माफ करनेका हा मागमाजा काननका हा गागागका हा पुनर्गों गिननका हा या और कोर् हा। जिन मनुष्यकी दृष्टि पनेपरारको—दूसरारा भंग करनेका—बन जाती है उा कोई भा काम हल्ला या नीरग नहा लगता। जा ना काम उग करनेका मिलगा उममें वह भगवानका दग्गा उाको मवा मानेगा। उगारा रम उगारा आनन्द कामका जानि पर निर नहा करेगा। उगारा रम हृदयक भातरम निरलता है कर्ण्यमें एन रहनेका भावनाग निरलता है। जा मनुष्य बनामनि-यागका गनाना और साधना चाहता है उग अपना ह काम इगा तरट करना चाहिये।

सम्बद्ध मन्त्र

११-१-२



